



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

वीरांगना

71वां अंक, मार्च 2021 तक



नेताजी सुभाषचन्द्र बोस 125वीं जयंती

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय का कार्यालय, मध्यप्रदेश, ग्वालियर

“महिला सशक्तिकरण दिवस कार्यक्रम”- 2021



वीरांगना

71वां अंक मार्च 2021 तक



पत्रिका परिवार

संरक्षक

जयदीप शाह

प्रधान महालेखाकार

सलाहकार मण्डल

नवनीत कुमार जैन

वरिष्ठ लेखाधिकारी

सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता

वरिष्ठ उपमहालेखाकार/
प्रशासन, पेंशन एवं निधि

प्रधान संपादक

कौशल किशोर चौधरी

वरिष्ठ लेखाधिकारी / प्रशासन (हिन्दी)

संपादक

जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति'

पर्यवेक्षक



मुख्य पृष्ठ संरचना : जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति'

वीरांगना में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं।
उनसे संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है।



जयदीप शाह

प्रधान महालेखाकार, मध्यप्रदेश, ग्वालियर



संदेश

“सर्वप्रथम राष्ट्र”, ये मात्र दो शब्द नहीं, वरन् भावनाएं हैं, करोड़ों देशप्रेमी भारतीयों की। “राष्ट्रगान, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रभाषा”, भारतवर्ष के गौरव और संस्कृति के प्रतीक हैं। ये तीनों ही आज प्रत्येक भारतीय के हृदय में, हृदयगति के रूप में धड़कते हैं, किन्तु अत्यंत दुःख का विषय है कि आज जो सम्मान “राष्ट्रगान और राष्ट्रध्वज” को मिलता है, वह ‘राष्ट्रभाषा’ के रूप में ‘हिन्दी’ को नहीं मिलता। कई राज्यों से तो यदा-कदा यह स्वर उभरते ही रहते हैं कि “उन पर हिन्दी थोपी जा रही है,” किन्तु इसके विपरीत बहुत से राज्य ऐसे भी हैं, जो निरंतर हिन्दी का प्रचार-प्रसार करते हुए, हिन्दी को ‘राष्ट्रभाषा’ के रूप में देखने के लिये हरसम्भव प्रयास कर रहे हैं।

बुद्धिजीवियों का एक बड़ा वर्ग यह मानता है कि जब ‘हिन्दुस्तान’ स्वतंत्र हो गया तो ‘हिन्दी’ क्यों आज तक परतंत्र है। जब हिन्दी ने स्वतंत्रता के पूर्व अंग्रेजों का असहनीय तिरस्कार सहा, तो वह हिन्दुस्तान की स्वतंत्रता के साथ ही स्वतंत्र क्यों नहीं हुई? राष्ट्रभाषा के लिये हिन्दी का विरोध करने वाले लोग यह विचार क्यों नहीं करते कि जब हिन्दुस्तान को स्वतंत्र कराने के लिये सहस्रों लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी, तो क्या हम उसी हिन्दुस्तान की भाषा ‘हिन्दी’ को स्वतंत्र कराने के लिये कुछ छोटे-छोटे कष्ट नहीं उठा सकते।

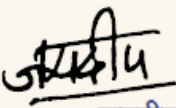
आईये, हम सब मिलजुलकर यह संकल्प लें कि हम अपने देश को शीघ्र ही ‘राष्ट्रभाषा’ के रूप में ‘हिन्दी’ का उपहार देंगे। फिर कोई राष्ट्र यह कहने का दुस्साहस नहीं कर पाएगा कि विश्वगुरु के रूप में उभरने वाले हिन्दुस्तान की अपनी कोई ‘राष्ट्रभाषा’ ही नहीं है।

हमारे लिये यह गर्व का विषय है कि हमारे कार्यालय में शत-प्रतिशत कार्य हिन्दी में ही संपन्न किया जा रहा है एवं कार्यालय, मुख्यालय तथा गृहमंत्रालय के निर्देशों का पालन करते हुए हिन्दी के उत्थान के लिये यथासंभव प्रयास कर रहा है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिये हमारे कार्यालय की गृह-पत्रिका ‘वीरांगना’ का योगदान एक छोटा सा किन्तु सफल प्रयास है।

हमारी कार्यालयीन गृहपत्रिका ‘वीरांगना’ को “नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति” द्वारा वर्ष 2019 का “सर्वश्रेष्ठ पत्रिका” का प्रथम पुरस्कार स्वरूप “पत्रिका शील्ड” प्रदान की गई है। साथ ही कार्यालय द्वारा वर्ष 2019 में “हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन” के लिये “नराकास शील्ड” प्रदान की गई है, जिसके लिये मैं पत्रिका के संपादक मंडल एवं रचनाकारों को बधाई देता हूँ।

वीरांगना के आगामी अंकों के सफल ई- प्रकाशन के लिये हार्दिक शुभकामनाएं.....


जयदीप शाह

अमित शाह

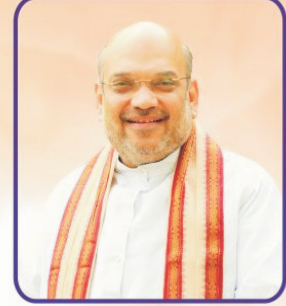
गृह मंत्री

भारत

AMIT SHAH

HOME MINISTER

INDIA



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिन के शुभ अवसर पर, मैं सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं।

पूरी दुनिया में हमारा देश, एक अलग प्रकार का देश है। कई प्रकार की संस्कृतियां, कई प्रकार की कलाएं और कई प्रकार की भाषाओं का मेलजोल यहां पर दिखाई पड़ता है। यह हमारी बहुत बड़ी ताकत है। हम सभी दृष्टि से एक संपन्न राष्ट्र हैं। अनेक भाषाएं एवं संस्कृतियां हमारी न केवल विरासत हैं, हमारी ताकत भी हैं, इसलिए हमें इसको आगे बढ़ाना है। सांस्कृतिक व भाषाई विविधता से भरे, इस गौरवशाली देश में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण के बीच, सदियों से, कई भाषाओं ने संपर्क बनाए रखने का काम किया है। हिंदी इसमें प्रमुख भाषा रही है और ये योगदान जो हिंदी का है इसको देश के कई नेताओं ने समय-समय पर सराहा है और हिंदी ने भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। हिंदी भाषा और बाकी सारी भारतीय भाषाओं ने मिलकर भारत की सांस्कृतिक विविधता को आगे ले जाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। हिंदी के साथ बृज, बुंदेलखंडी, अवधी, भोजपुरी, अन्य भाषाएं और बोलियां इसका उदाहरण हैं। हिंदी हमारे देश के स्वतंत्रता संग्राम के समय से राष्ट्रीय एकता और अस्मिता का प्रभावी व शक्तिशाली माध्यम रही है। हिंदी की सबसे बड़ी शक्ति इसकी वैज्ञानिकता, मौलिकता, सरलता, सुबोधता और स्वीकार्यता भी है। हिंदी भाषा की विशेषता है कि इसमें जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वग्राह्यता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया।

भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संस्कारों की अविरल धारा, मुख्य रूप से हिंदी भाषा से ही जीवन्त तथा सुरक्षित रह पाई है। हिंदी भाषा ने, बाकी स्थानीय भाषाओं को भी, बल देने का प्रयास किया है। हर राज्य की भाषा को, हिंदी ताकत देती है। हिंदी की प्रतिस्पर्धा कभी भी स्थानीय भाषा से नहीं रही, यह पूरे भारत के जनमानस में ज्यादा स्पष्ट होने की जरूरत है। 26 जनवरी 1950 को लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में यह प्रावधान रखा गया कि संघ की राजभाषा 'हिंदी' व लिपि 'देवनागरी' होगी। अनुच्छेद 351 के अनुसार भारत की अन्य भाषाओं का प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए, जहां आवश्यक है या वांछनीय हो, वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से, और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए, हिंदी की समृद्धि सुनिश्चित की जानी है।

संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करने के लिए आवश्यक है कि सरकारी कामकाज अनुवाद की अपेक्षा मूल रूप से हिंदी में किया जाए और अन्य स्थानीय भाषाओं में इसका अनुवाद किया जाए। भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से मेरा विनम्र आग्रह है कि स्थानीय भाषाओं के साथ-साथ वे सरकारी कामकाज में, मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों व कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आज भारत एक संसाधन-संपन्न शक्तिशाली देश के रूप में उभर रहा है और इसमें देश की समृद्ध भाषा हिंदी का बहुत बड़ा योगदान है। वैश्विक मंचों पर प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में दिए गए भाषणों से, हिंदी का वैश्विक कद मजबूत हुआ है और हिंदी प्रेमियों को प्रेरणा भी मिल रही है। इससे देश की युवा पीढ़ी भाषा के साथ जुड़ने की ओर अग्रसर हुई है। बस, आवश्यकता इस बात की है कि आगामी पीढ़ी को अधिक से अधिक सूचनाएं हिंदी में उपलब्ध कराई जाएं और उनमें ऐसे संस्कार विकसित किए जाएं कि वह मूल रूप से हिंदी भाषा में काम करें।

वर्तमान समय में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पोषित नहीं हो सकती। राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध है और इस दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। प्रधानमंत्री जी के 'आत्मनिर्भर भारत' के अभियान को आगे बढ़ाते हुए, राजभाषा विभाग द्वारा हिंदी के लिए ई-टूल्स सुदृढ़ करने का काम किया जा रहा है। 'वोकल फॉर लोकल' के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल 'कंठस्थ' का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। इसके अतिरिक्त लीला हिंदी प्रवाह, ई-महाशब्दकोश मोबाइल एप्लीकेशन भी हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। राजभाषा विभाग द्वारा ई-सरल हिंदी वाक्यकोश का विकास किया जा रहा है।

राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ाने और कार्यालय स्तर पर हिंदी में लेखन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने में, हिंदी गृह-पत्रिकाओं का विशेष महत्व है। राजभाषा विभाग द्वारा बनाए गए ई-पत्रिका पुस्तकालय के माध्यम से हिंदी के पाठक विभिन्न सरकारी संस्थानों द्वारा प्रकाशित होने वाली ई-पत्रिकाओं से लाभान्वित हो पाएंगे। आज हिंदी दिवस के मौके पर मेरा यह कहना है कि सभी मंत्रालय सरकारी कामकाज में इन ई-टूल्स का अधिक से अधिक प्रयोग सुनिश्चित करें।

विगत कई माह से पूरी दुनिया अत्यंत विषम परिस्थिति से गुजर रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत कोरोना महामारी से लड़ने में सफल रहा और इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों के साथ प्रत्यक्ष नागरिकों ने भी सहयोग किया है। समय-समय पर प्रधानमंत्री जी ने राष्ट्र को संबोधित कर देश की जनता को कोरोना महामारी से लड़ने के लिए सबल प्रदान किया। कोरोना महामारी से उत्पन्न अप्रत्याशित संकट की स्थिति के कारण, जनहित को प्राथमिकता देते हुए इस वर्ष 'हिंदी दिन समारोह' का आयोजन नहीं किया जा रहा है लेकिन जिन मंत्रालयों, विभागों, संस्थाओं, बैंकों, सरकारी उपक्रमों, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने पूरे वर्ष पूरी निष्ठा से हिंदी में श्रेष्ठ कार्य किया है और प्रतिष्ठित राजभाषा कीर्ति पुरस्कार जीते हैं, उन्हें मैं अपनी ओर से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। इसके साथ-साथ हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन और पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उत्कृष्ट लेखों के लिए प्रदान किए जाने वाले राजभाषा गौरव पुरस्कार विजेता भी बधाई के पात्र हैं ही। मैं आशा करता हूँ कि आप सभी पुरस्कार विजेता यहीं से थकेंगे नहीं, भविष्य में, हिंदी के लिए कार्य करने के लिए, उच्च और अनुकरणीय मानदंड प्रस्थापित करते रहेंगे। ये प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा थी कि देश इस आपदा को अवसर में परिवर्तित करे। राजभाषा विभाग ने भी इस अवसर का सकारात्मक उपयोग करते हुए सूचना तकनीक का सहारा लिया और पहली बार वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग जैसे ऑनलाइन माध्यमों के जरिए, बड़ी संख्या में, ई-निरीक्षण एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन किया। राजभाषा विभाग के प्रशिक्षण केंद्र, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा पहली बार ऑनलाइन माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन शुरू किया गया जिसमें परंपरागत क्लासरूम टीचिंग को परिवर्तित कर, ऑनलाइन वेब कॉन्फ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

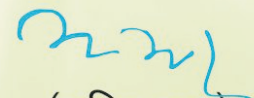
संघ की राजभाषा नीति के अनुसार हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन करें, तत्परता के साथ अनुपालन करें। हम स्वयं मूल कार्य हिंदी में करते हुए अधिकारियों/कर्मचारियों से राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएँ ताकि आमजन सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ, निर्बाध रूप से उठा पाए।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम प्रतिज्ञा लें कि हिंदी की उन्नति व प्रगति की यात्रा पूरे समर्पण के साथ हम आगे बढ़ाते हुए, हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी को सभी स्थानीय भाषाओं के साथ में रखते हुए, हिंदी के माध्यम से आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करेंगे। इस मौके पर, मैं देश के युवाओं को भी कहना चाहता हूँ कि जब स्थानीय भाषा में बोलने वाला साथी हो तब और कोई भाषा का प्रयोग न करते हुए भारतीय भाषाओं के प्रयोग का आग्रह रखिए। मैं अभिभावकों को भी कहना चाहता हूँ, - अपने बच्चों के साथ भारतीय भाषाओं में बात करने की बात का संस्कार डालें और अपनी भाषाओं की यात्रा को हम आगे बढ़ाएं। मोदी सरकार की नई शिक्षा नीति से अन्य भारतीय भाषाओं व हिंदी का समानांतर विकास होगा, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे सामूहिक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु, विश्वपटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण समृद्ध भाषा के रूप में स्थापित होगी।

'हिंदी दिन' के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मैं हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भारत माता की जय !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020


(अमित शाह)

शुभकामनाएं



सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता

वरिष्ठ उप महालेखाकार/प्रशासन एवं पेंशन

कार्यालय की गृहपत्रिका 'वीरांगना' के 71 वें अंक की प्रति आपके कर कमलों में देखकर मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है।

'सरलता' और 'सहजता' भारतीय जीवन मूल्यों का उच्च आदर्श है। यही बात 'हिन्दी' पर भी लागू होती है। अन्य सभी भाषाओं की तुलना में 'हिन्दी' अत्यधिक सरल और सुबोध है। अतः हमारा यह नैतिक कर्तव्य है कि हम हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यथासंभव सहयोग प्रदान करें एवं जहां तक संभव हो सके हिन्दी को सरल बनाएं, न कि क्लिष्ट। तभी हम हिन्दी को जन साधारण की भाषा बनाकर, इसे अधिकतम लोगों तक पहुँचा पाएंगे।

पत्रिका के आगामी अंकों के सफल प्रकाशन के लिये मंगलकामनाएं।

सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता



अनुक्रमणिका

1. करोड़ों के ईनाम	जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति'	हास्य व्यंग्य	7
2. आचार्यप्रज्ञ	मदन गोपाल शर्मा	व्यंग्य	12
3. ढलता सूरज	डॉ. कृष्णकांत चौहान 'नीर'	कहानी	14
4. जिन्दगी खजूर है	हेमन्त गोयल	कविता	18
5. रविवार का वह यादगार दिन	सूर्यकांत भारद्वाज	संस्मरण	19
6. सैनिक	सुष्मिता श्रीवास्तव	लेख	21
7. मेरा शहर—अयोध्या	काजल वर्मा	लेख	23
8. अपेक्षायें—एक हकीकत	प्रवीण कुमार कम्टान	लेख	25
9. सबसे बड़ी गुरु—माँ	रचना सक्सेना	लेख	28
10. जन्मदिवस	जयप्रकाश	लेख	30
11. खानपान का स्वास्थ्य एवं विचारों पर गहरा प्रभाव	लालमणि शर्मा	लेख	32
12. माँ / अपना हमें बना लेना	हरिओम कुमार	कविताएं	34
13. मैं कब कहता हूँ	देवेन्द्र कुमार मिश्रा	कविता	35
14. न जाने ऐसी क्या बात हो गई	विनय कुमार पटेल	कविता	36
15. सरे राह यूँ रुसवा न कीजिये	ए.एच.खान	गज़ल	37
16. खेलकूल एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ	सोहन सिंह	कल्याण कक्ष	38
17. विदाई (माह अप्रैल 2019 से मार्च 2021 तक)		संपादक	41





करोड़ों के ईनाम

— जे.जे. श्रीवास्तव 'ज्योति'

पर्यवेक्षक

सर्दी आए, गर्मी आए या सूखा पड़े। कुछ चीजें कभी नहीं बदलती। आज भी हम कुछ उन चीजों को देखते रहते हैं, जिन्हें बचपन में भी देखते थे। विश्वास नहीं होता तो खोलकर देखो आज का कोई भी समाचार पत्र। एक पृष्ठ पर पन्द्रह बीस खानों का एक खेल बना होगा। नीचे लिखा होगा—“इन अंकों को ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, दाईं ओर से बाईं ओर, बाईं ओर से दाईं ओर इस प्रकार जोड़िए कि योग 18 ही आए। यदि आप जीनियस हैं तो आपके लिये यह बहुत सरल काम है। जीतने वाले व्यक्ति को एक बहुत बढ़िया कंपनी का टेलीवीजन मिलेगा, जिसमें आप देश विदेश के सभी कार्यक्रमों को देख सकेंगे। तो देर किस बात की है, उठाईये पैन और बता दीजिये सारी दुनिया को कि आप कितने जीनियस हैं।” इससे सारी दुनिया में कोई प्रभावित हुआ हो या न हुआ हो, पर 80 किलो मीटर दूर गांव से अपने मामा के घर शहर में पढ़ने के लिये आये 80 किलो के हलकू पर जरूर हुआ, जो वैसे तो एक ही कक्षा में कई होली, दिवाली मना चुका था परन्तु दर्शाना यह चाहता था कि वह शहर का ही नहीं पूरे प्रदेश का सबसे होशियार व्यक्ति है। हलकू ने एक हाथ में अखबार और दूसरे हाथ में कलम पकड़ी और चेहरे पर चिंता से भरी ऐसी मुद्रा बना ली, जैसे देश की लाखों समस्याओं की जिम्मेदारी प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति पर न होकर अकेले हलकू के कंधों पर ही आ गई हो। आधा घंटे के जी तोड़ परिश्रम के बाद, बिना किसी के बताए आखिर हलकू समझ ही गया कि उसने गलत काम से टांग अड़ा कर, बहुत बड़ा पंगा मोल ले लिया है। उसने मन ही मन गांव में सीखी हुई वो भद्दी भद्दी गालियां दे डाली, जिसे शहर में न देने की शर्त पर ही उसके मामा उसे गांव से शहर में लाए थे। उसने धीरे से कमरे में चारों ओर देखा कि उसकी मधुर ध्वनि कोई सुन तो नहीं रहा। वह जानता था कि इधर मामा ने उसके मुंह से निकली गाली सुनी



और उधर उसका गांव का टिकट कट गया, पूरे सैंतीस रुपये पचास पैसे का। वह धीरे से पुनः बुदबुदाया—“अबे हलकू औकात में रह। माना कि परीक्षा में तू पूरे गांव में सबसे अधिक नंबर लाया था, पर लाया तो नकल करके ही था वरना तू अच्छी तरह जानता है कि एक कक्षा पास करने के लिये तुझे कम से कम दो तीन साल तो चाहिए

ही। अचानक उसकी नजर अखबार के ही एक विज्ञापन पर पड़ी। उसकी नजरें स्कूटर के पहिये की तरह गोल-गोल व बड़ी-बड़ी हो गईं। उसे लगा कि शायद अब वह मौका आ गया है, जब वह, उसे बेकार और नकारा कहने वाले मामा को यह बता सकता है कि जिस हलकू को वह

देसी तमंचा समझते हैं, वह आखिर है कितनी बड़ी तोप।

समाचार-पत्र के एक पेज पर, एक जगह पर बड़े बड़े अक्षरों में खुदा हुआ था—“इसी समाचार पत्र को गौर से देखिये। इसमें प्रतिदिन एक कूपन कहीं न कहीं छपा होगा। बस उस कूपन को तीन माह तक काटकर एक फोरमेट पर क्रम से चिपकाना है। एक भी दिन खाली रहा तो प्रतियोगी प्रतियोगिता से बाहर हो जाएगा।”

“हे भगवान, इतनी कड़कड़ाती सर्दी में तीन महीने तक 5 बजे उठकर, रेल के आने की तरह अखबार वाले का इंतजार कौन करेगा। न बाबा न मुझसे न हो पाएगा ये काम। मामा भी कहेंगे कि तू शहर में पढ़ने आया है कि अखबार काटने में टाइम काटने। लेकिन तभी उसकी आत्मा ने कहा—“नहीं हलकू, तुझे बड़ी मुश्किल से मामा के घर के लिये कुछ करने का मौका मिला है। क्या तू इस सुनहरे मौके को यूं ही अपने हाथ से जाने देगा। मामा खुश हो जाएंगे कि उनके अपने दोनों लड़कों ने उनके घर के लिये ऐसा कुछ नहीं किया जो इतने छोटे से गांव से आए इस हलकू ने कर दिया।”

हलकू ने जल्दी से एक कैंची उठाई और डबल बैड पर अखबार को रखकर पहले दिन का कूपन काट

दिया और ऐसे खुश होने लगा मानों उसने लोक सभा की कोई सीट जीत ली हो, वो भी बिना चुनाव लड़े। अति प्रसन्न मुद्रा में वह कमरे से टूथपेस्ट की तरह निकला और अधिक समय तक न टाला जाने वाले काम को करने के लिये टॉयलेट में घुस गया। अचानक जोर जोर से चिल्लाने की आवाजें सुनकर वह समय से पहले ही फारिग होकर बाहर निकला और मामी से बोला—“क्या मामी आप भी सुबह सुबह मुर्गे की तरह इतना जोर जोर से चिल्ला रही हो।”

मामी हलकू से भी तेज आवाज में दहाड़ती हुई बोली—“अच्छा, सुबह—सुबह किसी हरामखोर ने मेरी बारह सौ रुपये की नई चादर काट दी और मैं पूछूं भी नहीं कि इतनी महंगी चादर का कटवैया आखिर है कौन ?”

“कौन सी चादर मामी, जो आप परसों मॉल से लेकर आई थी। वो गुलाबी फूलों वाली, जिस पर बहुत सुंदर....” शेष शब्द हलकू के मुंह में बच्चों के चबाने वाली च्युंगम की तरह वापस चले गये। वह एकदम शांत हो गया। आखिर वह किस मुंह को खोलकर कहता कि आप जिसे श्रीनगर में आतंकवादी की तरह ढूंढ रही हैं, वह होनहार चादर कटवैया और कोई नहीं, आपका होनहार भांजा हलकू ही है और इस घटना के घटने की आधारशिला भी आपके इसी भांजे के ही कर कमलों द्वारा कुछ देर पूर्व ही रखी गई थी। उस समय हलकू ने वहां से सात दो नौ होने में ही अपनी भलाई समझी। वह तीर की तरह आंगन नापकर और दरवाजा फाड़कर सड़क पर आकर बाजार की भीड़ में घुल मिल गया। जब अंधेरा हो गया तो हलकू ने घर के पिछले दरवाजे से ऐसे प्रवेश किया, जैसे उसने किसी मुख्यमंत्री का कत्ल कर दिया हो और मुख्य दरवाजे पर बैठकर शहर की सारी पुलिस उसके आने की ही प्रतीक्षा कर रही हो। इस समय उसके दिमाग में चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत बार बार अंदर से बाहर झांक रही थी, जिसे वह बार बार बाहर की ओर धकेल रहा था। उसने धीरे से अपने कमरे का दरवाजा खोला और खटिया पर लेटकर तुरंत चादर लपेट ली। उसने धीरे से चादर हटाकर कमरे का नजारा देखा। सामने मंदिर में रखे सभी देवी देवताओं को देखा और बारी बारी से धन्यवाद दिया।

“हलकू ओ हलकू”—अचानक हलकू की मामी की कान को फाड़ देने वाली आवाज सुनकर हलकू ऊपर

से नीचे तक कांप गया। उसे समझने में तनिक भी देरी नहीं लगी कि मामी को उसकी करतूत का पता चल गया है। वह धीरे से मन ही मन बुदबुदाया—“हलकू बेटा, जल्दी से उठकर समेट ले अपने कपड़े, वरना मामी तुझे कपड़े समेटने क्या, कपड़े बदलने का भी वक्त नहीं देगी।” उसने एक बार पुनः सभी देवी—देवताओं को एक मिनट में 20—20 बार याद करके 11 नारियल का आश्वासन भी दिया और महीनों से खटिया तोड़ रहे किसी बीमार रोगी की तरह बोला—“जी मामी, क्या उस चादर कटवैया का कुछ पता चला?”

“अरे कहां बेटा। ऐसे शातिर, हरामखोर लोग इतनी आसानी से नहीं पकड़े जाते। कीड़े पड़ें, मरे को केंसर हो जाए। लेकिन हलकू जिस दिन मुझे उसका नाम भर पता चल गया, उस दिन उसे इतना ठोकूंगी कि वह किसी की चादर काटना क्या, अपनी चादर पर सोने से भी डरेगा। बस एक बार उसका पता भर लग जाए”—मामी की भरत नाट्यम की किसी नृत्यांगना जैसी बड़ी बड़ी गोल आंखें और गुस्से में लाल तमतमाया हुआ सूरजनुमा चेहरा देखकर हलकू नीचे से ऊपर तक कांप गया। उसके हृदय की ध्वनि ऐसे आवाज करने लगी जैसे छत्तीसगढ़ एक्सप्रेस चंबल नदी के पुल के ऊपर से गुजर रही हो। मामी के नथुने किसी गुस्साई भैंस के नथुनों की तरह फूल गये और मुंह से गैस पर रखे कुकर की सीटी की आवाजें सी आने लगी।

“अरे, अब छोड़ो भी मामी, कट गई होगी किसी से गलती से चादर”—हलकू अब तक यह तो समझ ही चुका था कि इस समय मामी के आवाज लगाने का कारण कम से कम वो चादर तो नहीं है, जिसे केंची से बेरहमी से काटने का सौभाग्य हलकू को मिला था। वह मन ही मन खुश होता हुआ बोला—“आप मुझे आवाज क्यों लगा रहीं थीं?”

“अरे मैं तो यह पूछने आई थी कि तूने दोपहर का खाना क्यों नहीं खाया। ठीक है, मैं सुबह बहुत गुस्से में चिल्ला रही थी, पर उसका तुझसे और तेरे खाना खाने से क्या संबंध। मैं अच्छी तरह जानती हूं कि तू कैसा भी सही, पर ऐसी हरकत करने की सपने में भी नहीं सोच सकता। चल अब आकर खाना खा ले”—इतना कहकर मामी वहां से चली गई और हलकू मन ही मन सभी भगवानों को दोनों हाथों से भर भरकर धन्यवाद देने में व्यस्त हो गया।

हलकू की दुम, मेरा मतलब कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती। इस हादसे के बाद भी हलकू की समाचार पत्र में छपे कूपनों को इकट्ठा करके कार, वाशिंग मशीन, बाईक बगैरा-बगैरा जीतने की कामना में कोई अंतर नहीं आया। एक दिन अखबार वाले ने पोर्च में जैसे ही अखबार फँका, हलकू ने तुरंत मुंह से अखबार लपक लिया और जल्दी से जेब से नया ब्लेड निकालकर कूपन काटकर जेब में रख लिया और पेपर अंदर आकर चुपचाप टेबल पर रख दिया। कुछ देर बाद मामा जोर जोर से चिल्ला रहे थे—“अरे आजकल ये पेपर फटा हुआ क्यों आ रहा है। कल बात करनी ही पड़ेगी पेपर वाले से, पेपर दे रहा है या रद्दी।”

दस बजे और मामा के दफ्तर जाने का समय हुआ। हलकू बाथरूम में नहा रहा था। अचानक मामा के सिंह जैसी दहाड़ सुनकर हलकू के हाथ से साबुन फिसलकर नाली में बह गया। हलकू ने जल्दी से कपड़े पहने और पोर्च की तरफ लपका जहां से मामा के चिल्लाने की आवाजें आ रही थीं। दरवाजे पर खड़ी कंपकपाती मामी को देखकर हलकू ने प्रश्न दागा—“क्या हुआ मामी, मामा इतनी जोर से किस पर गुस्सा हो रहे हैं?”

“वही तो समझ नहीं आ रहा कि गुस्सा किस पर हों। उस दिन किसी हरामखोर कुत्ते ने चादर काट दी थी और आज किसी करमजले ने इनकी मोटर सायकल की सीट पर चौखाना बना दिया है। अभी परसों ही तो चार सौ रुपये में सीट कवर लगवाया था, तेरे मामा ने”—इतना कहकर फूट फूटकर रो पड़ी मामी।

मामी को सात्वना देकर हलकू पोर्च में आया, जहां मामा अभी तक पूरा घर सिर पर उठाए हुए थे।

“क्या हुआ मामा। किसने काटा आपकी मोटर सायकल का सीट कवर। एक बार उसका नाम तो बताओ। फिर देखो आप। हड्डी-पसली तोड़कर चौराहे पर नहीं टांग दी तो.....।” आगे के शब्द हलकू को लाख बार दूढ़ने पर भी नहीं मिले। मोटर सायकल की सीट के बीचों बीच तीन बाई तीन इंच का चौखाना बना हुआ था। वहां का चमड़ा गायब था। हलकू को समझने में एक सैकण्ड भी नहीं लगा कि इस बड़े काम की आधार शिला भी उसके ही कर कमलों द्वारा रखी गई है। सुबह हलकू ने हॉकर से पेपर लेकर कूपन उसी मोटर सायकल की सीट पर रखकर काटा था।

“सुन हलकू। अब कुछ भी हो जाए। कितना भी

रुपया खर्च हो जाए। तू पता कर कि आखिर हमारे घर में ये हरकतें कर कौन रहा है। एक बार, सिर्फ एक बार पता लग जाए कि यह सब कौन कर रहा है, उसका पृथ्वी पर रहना मुश्किल कर देगा तेरा यह मामा”—मामा ने हलकू के कंधे पर हाथ रखते हुए बेहद गुस्से से कहा।

“हलकू से कुछ नहीं होगा जी। अब मुझे ही कुछ करना पड़ेगा। आज शाम को ही मैं “रट्टा बाबा” के पास जाऊंगी। वही इसका सही समाधान करेंगे। ये काम किसी इंसान का नहीं है। जरूर हमारे घर में कोई भूत प्रेत का साया घुस आया है। पहले चादर कटी। तुम बता रहे थे कि तुम्हारे “शेविंग बॉक्स” से नए नए ब्लेड, कैंची गायब हो जाते हैं और एक दो दिन बाद वापस भी आ जाते हैं। अरे ब्लेड गायब होकर वापस कैसे आ सकते हैं। हलकू शाम को हम दोनों चलेंगे रट्टा बाबा के पास।” इतना कहकर मामी किचन की ओर लपक ली, जहां गैस पर रखी सब्जी एक बड़े कोयले का रूप ले चुकी थी। मामा गुस्से से मोटर सायकल में किक मारकर सड़क की लंबाई नाप रहे थे।

आखिर वह दिन आ ही गया, जिसका हलकू को हफ्तों से इंतजार था। उसने एक बार सारे चिपकाए गये कूपनों को चैक किया। अचानक चार खाली जगह देखकर उसका दिमाग चकरा गया। चार कूपनों की जगह खाली पड़ी थी। हलकू ने दिमाग पर जोर दिया तो उसे ध्यान आया कि वह गांव में एक रिश्तेदार की शादी में गया था, चार दिन के लिये, यह वही खाली चार दिन थे। हलकू का दिमाग चकरा गया। उसे समाचार पत्र में दिखाए गये उपहार जैसे— कार, मोटर सायकल, फ्लैट, फौरन दूर सब बहुत दूर होते दिखाई देने लगे। हलकू धीरे से बुदबुदाया —“ इतनी जल्दी हार मत मान हलकू, तुझे कुछ तो करना पड़ेगा।” अचानक उसकी आंखों में हजार हजार वाट के दो बल्ब जल गये। उसने बाहर आकर मामा की तीस साल पुरानी सायकल उठाई और उसका मुंह घुमा दिया घर से छः किलो मीटर दूर “सरकारी लायब्रेरी” की ओर। घर के लोग भी आश्चर्यचकित होकर हलकू को देख रहे थे कि जो हलकू दिन में आठ बार मामा से कहता था कि मामा इस मनहूस खटारा को कवाड़ी की दुकान पर जाकर तुलवा दो। वही हलकू आज उसी सायकल को इतने प्यार से कहां ले जा रहा है। उसके ईनाम पाने के जुनून ने उसे आधा घण्टे का रास्ता मात्र 10 मिनट में नपवा दिया। लायब्रेरी पहुंचते ही उसने बिना स्टैंड की सायकल को

केले के पेड़ से टिका दी और एक सेकण्ड में ही लायब्रेरी की 25 सीढ़ियां गिन गया। दूसरे सेकण्ड में तो वह लायब्रेरी के मैनेजर से पूछ रहा था—“चार महीने पुराने चार अखबार मिल जाएंगे?” “हां, हां मिल जाएंगे, मगर तुम इतना हांफ क्यों रहे हो। क्या उन अखबारों में तुम्हारे कत्ल की खबर छपी है उसमें”—मैनेजर चुटकी लेता हुआ बोला।

“तो फिर ये चारों निकाल दो”—हलकू ने अपने दाएं हाथ की कलाई राखी बंधवाने की स्टाइल में दिखाई, जिस पर पैन से चार तारीखें छपी हुई थीं।

“यह लो”—मैनेजर ने एक रसीद हलकू की तरफ उछाल दी।

हलकू ने रसीद देखी तो उसकी आंखें सगाई की परात की तरह गोल व बड़ी हो गई। वह जीवन में पहली बार हकलाते हुए बोला—“क क क क्या, दो सौ रुपये”

“हां हां, दो सौ रुपये। पचास रुपये अखबार, तुम्हारे कानपुर में हड़ताल चल रही है क्या”—मैनेजर ने हलकू के कान के पास आकर गरजते हुए उत्तर दिया।

“लेकिन अखबार तो दो रुपये का आता.....”

“है, परन्तु तुम्हारे पास नहीं है। बस यह दो सौ रुपये उसी “नहीं है” के हैं”—मैनेजर ने गुराकर हलकू को ऐसे देखा कि हलकू का हाथ खुद ब खुद पेंट की जेब में चला गया। उसने किसी जुआरी की तरह जेब में गुड़ी मुड़ी सौ सौ के दो नोटों को निकाला और शीशे के दूसरी ओर से निरंतर हलकू को ही ताक रहे मैनेजर की ओर बढ़ा दिये।

“नोट दे रहे हो या अफीम की पुड़िया”—मैनेजर पुनः घुराया।

हलकू ने दोनों नोटों को खोला और दोनों नोटों पर छपे गांधी जी के अंतिम दर्शन कर उन्हें शीशे के दूसरी ओर धकेल दिये, जिसे मैनेजर ने बच्चों द्वारा कटी पतंग को पकड़ने की स्टाइल में तुरंत लपक लिये। इधर हलकू खून के घूंट पी रहा था। आखिरी दिन था फार्म जमा करने का, तो हलकू तो इसलिये चुप था कि कहीं मैनेजर अखबार देने से मना न कर दे।

पांच मिनट बाद ही चार अखबार आ गये और उन्हें बाइज्जत हलकू को सौंप दिया गया। हलकू ने फुर्ती से अखबार लपके और जेब से कैची निकालकर उनमें से दो बाई दो इंच के चार टुकड़े काट लिये। शेष अखबार को हलकू ने छूआ भी नहीं।

हलकू ने घड़ी देखी। अभी दो घण्टे का समय

और था ईनाम के फोरमेट को जमा करने का। उसने उस दिशा में दौड़ लगा दी जहां हलकू ने केले के पेड़ के सहारे मामा की प्यारी सायकल को रखा था। दिमाग घूम गया हलकू का, जब उसे वहां न सायकल दिखी न केले का पेड़। जब उसे कूछ समझ में नहीं आया तो उसने पास खड़े हुए एक ठेले वाले से पूछा—“भैया यहां पर एक पुरानी सायकल खड़ी...”

“वो मिश्राजी ले गये। तुम्हारी सायकल के कारण उनका प्यारा केले का पेड़ जो टूट गया। जानते हो उसमें दो सौ रुपये के तो केले लगे होंगे”—ठेले वाला लापरवाही से बोला।

“ये मिश्राजी मिलेंगे कहां?”

“मिलेंगे क्या, वो खुद तुम्हें ढूढ़ रहे हैं। वो सामने आ रहे हैं न, वही मिश्राजी हैं। सम्हलकर बात करना बड़े गुरसैल पहलवान हैं”—ठेले वाले ने हलकू को समझाते हुए कहा।

पांच मिनट बाद ही हलकू ने जेब हलकी की और उस भीमकाय पहलवान के सामने काफी गिड़गिड़ाने और मिन्नतें करके कि अभी मेरे पास आखिरी तीन सौ रुपये ही हैं, अपने मामा की सायकल अपने पजेशन में ले ली।

हलकू ने सायकल के कान खींचे और सीट पर बैठकर हवा से बातें करने लगा। अचानक हलकू को लगा कि उसके पैडल को लगातार चलाने के बाद भी सायकल कुछ ज्यादा आगे बढ़ नहीं पा रही है। जब सायकल रुक गई तब हलकू सायकल से नीचे कूदा और किसी बड़े इंजीनियर की तरह झुककर सायकल को देखने लगा। अचानक हलकू के मंह से निकला—“मामा भी कैसी सायकल रखते हैं, जिसमें चैन ही नहीं है।” पास सायकल पर जा रहे एक बच्चे ने हलकू की बात सुन ली और हंसते हुए बोला—“भैया, अभी तक तो बिना चैन वाली सायकल बनी नहीं है, पर हां, आपकी सायकल की टूटी चैन एक मोटर सायकल वाले ने उठा ली और तेजी से भाग भी गया।”

“सायकल में नई चैन डलवानी है तो सायकल इधर ही ले आओ”—पास ही की एक सायकल के दुकानदार ने ऐसे कहा मानों उसे पता था कि हलकू आने वाला है।

हलकू ने अपनी पेंट में बनी चोर जेब से 150 रुपये निकालकर दिये और दुकानदार तुरंत चतुर्भुज हो गया। उसने 5 मिनट में ही चैन बदलकर सायकल हलकू

के हाथों में थमा दी। हलकू ने घड़ी देखी जो हलकू से चीख चीख कर रही थी—“अबे पागल हो गया है क्या। भूल गया विज्ञापन में साफ लिखा था कि 5 बजे के बाद इनामी फोरमेट स्वीकार नहीं किये जाएंगे।”

हलकू ने सायकल दुकानदार के हाथों से लपकी और 6 किलोमीटर दूर उस पेट्रोल पंप की दिशा में एड़ लगा दी, जहां उसे 5 बजे तक वह इनामी फोरमेट जमा करना था। दस मिनट में ही वह 6 किलोमीटर का रास्ता नापकर “राम कृपा” पेट्रोल पंप पर खड़ा पूछ रहा था कि यह फौरमेट कहां पर जमा करना है। पेट्रोल पंप के मैनेजर ने अपना व हलकू का समय व्यर्थ किये बिना सेकेण्ड से पहले ही बता दिया कि यह फौरमेट यहां से 3 किलोमीटर दूर, “कृपा राम” पेट्रोल पंप पर जमा हो रहे हैं, यह तो “राम कृपा” पेट्रोल पंप है।

हलकू का चेहरा घुटने तक लटक गया। उसने पसीने से तरबतर कमीज पर एक बार हाथ फेरा और पुनः तैयार हो गया तीस किलोमीटर तक की सायकल यात्रा के लिये। महीनों के बाद ही सही, आखिर वह समय आ ही गया जब हलकू फौरमेट जमा करने के लिये लाईन में लग गया। हलकू ऐसे प्रसन्न हो रहा था, मानो उसने शहर में ही नहीं पूरे देश में आई. ए. एस. टॉप किया हो। हलकू ने फौरमेट जमा किया और पसीना सुखाने के लिये पास की ही एक पटिया पर बैठ गया। अचानक एक रौबदार आवाज ने उसे हिला दिया—“चलो भाई, घर जाकर सोना। आठ बज रहे हैं। पेट्रोल पंप बंद हो गया है।”

हलकू ने धारा 370 लगने के बाद खुले आंशिक बाजार की तरह अपनी आधी आंख खोली तो अपने सामने 6 फीट से अधिक ऊंचे विशालकाय काले आदमी को अपनी ओर धूरते हुए देखा।

“कौन यमराज”—आखें मीड़ते हुए हलकू ने पूछा। “दो मिनट में यहां से निकल ले वरना तेरी यमराज से मिलने की इच्छा भी पूरी कर दूंगा”—वह दांत पीसता हुआ बोला।

हलकू ने वक्त की नजाकत को समझा और तुरंत खड़ा हो गया क्योंकि उसके सामने पुलिस इंसपेक्टर कालिया खड़ा हुआ था। हलकू ने पेड़ से टिकी सायकल उठाई और घर की दिशा में घुमा ली।

घर में घुसते ही घर के सभी सदस्य उसे ऐसे घूरने लगे जैसे पहचानने की कोशिश कर रहे हों।

“मेरी सायकल कहां ले गया था सुबह से”—मामा हलकू पर ऐसे चिल्लाए जैसे हलकू उनकी सायकल नहीं हैलीकॉप्टर ले गया हो।

हलकू ने चारों ओर से खुद को एक मुजरिम की तरह घिरा हुआ देखकर आत्म समर्पण करते हुए चुपचाप अंदर जाने में ही अपनी भलाई समझी। अंदर आकर हलकू बड़बड़ाया—“आज डांट लो मामा। परसों जब तुम्हारी सायकल वाली जगह पर दस लाख रुपये वाली चमचमाती हुई कार खड़ी होगी तो तुम खुद समझ जाओगे कि हलकू कितनी बड़ी तोप है। ले लो अभी हलकू को हलके में।” घर के सभी लोग रात का खाना खा चुके थे। गुस्से के कारण मामी ने भी हलकू से खाना खाने के लिये नहीं पूछा।

दो दिन निकल गये। तीसरे दिन हलकू सुबह चार बजे ही उठ गया या यूं कहा जाए के हलकू ने रात भर जागकर जैसे तैसे चार बजाए। अखबार वाले की सायकल की आवाज सुनते ही हलकू ने दरवाजे की तरफ दौड़ लगा दी और अखबार वाले से अखबार लगभग छीन ही लिया। अखबार वाला सायकल से गिर गया और हलकू को उल्टा सीधा बोलने लगा। पर हलकू के पास उसकी किसी बात को सुनने के लिये समय ही कहां था। वह तो जल्दी जल्दी अखबार के पन्ने पलटने में लगा था आखिर आज उसके चार महीने की मेहनत रंग जो ला रही थी। एक जगह पर जाकर वह रुक गया। उसकी आंखों में हजार हजार वाट के बल्व लग गये। उसके सामने वह ईनामों की लिस्ट रखी थी जिसका वह तीन महीनों से इंतजार कर रहा था। हलकू ने सबसे पहले चार कारों के नंबरों से अपने कूपन के नंबर मिलाए, फिर तीस मोटर सायकलों के नंबरों से। उसके बाद उसने पचास रंगीन एल.ई.डी ब्यालीस इंची टी.वी. से अपना नंबर मिलाया। हलकू जानता था कि उसका एक ईनाम तो निकलेगा ही, अतः अब वह आयटम न देखकर केवल नंबर ही मिला रहा था। एक जगह पर जाकर हलकू ने चैन की सांस ली। उसका चेहरा कमल उसा खिल गया। आखिर उसकी तीन महीने की मेहनत सफल जो हो गई थी। अचानक हलकू ने ईनाम वाली वस्तु देखी तो उसे चक्कर आ गया। जिस सूची में उसका नाम था, उसके ऊपर मोटे-मोटे अक्षरों में छपा हुआ था “शीशे के चार गिलास।” ○○

मेरी सूक्ष्म (माइक्रो) कहानियाँ

1. मंदिर पर चढ़ा घंटाचोर, त्रिशूल पर गिरकर मर गया। 9 शब्द
2. डॉक्टर की सलाह न मानकर भिखारी बांसुरी बजाते-बजाते मर गया। 11 शब्द
3. लालची जगदीश ने खेत बेचकर, लाख रुपया सिरहाने रखकर सोए दामाद को मार डाला। 14 शब्द
4. रिक्शेवाले महेश ने पत्नी को पढ़ाकर उपायुक्त बनाया, जिसने आयुक्त से पुनर्विवाह कर लिया। 14 शब्द



जे.जे. श्रीवास्तव

आचार्यप्रज्ञ

– मदन गोपाल शर्मा

अतिथि रचनाकार

मैं साहित्य में थोड़ी रुचि रखता हूँ, पढ़ने का शौक है तथा कवि सम्मेलनों व काव्य गोष्ठियों में चला जाता हूँ। पर मैं अपने को साहित्यकार नहीं मानता, साहित्य सृजन तो साहित्य साधकों का काम है। विगत कई दशकों से प्रतिवर्ष मैं कुछ साहित्यिक पुस्तकें खरीदता हूँ। इस तरह मेरे पास काफी पुस्तकों का संग्रह हो गया है। खैर, यह सब बातें तो छोड़िए, मैं आपको एक स्वनाम धन्य साहित्यकार जी के विषय में बताता हूँ। उनका असली नाम क्या था, यह तो पता नहीं पर “आचार्य प्रज्ञ” के नाम से जाने जाते थे। मेरे पड़ोस में किराए के मकान में रहने आए थे। प्रारंभिक परिचय में उन्होंने स्वयं को प्रख्यात साहित्यकार बताया तथा अनेक साहित्यिक संस्थाओं से अपने को सम्बद्ध बताया। मेरी साहित्य में रुचि जानकर उन्हें प्रसन्नता हुई। अक्सर मुलाकात हो जाती थी, पर साहित्य पर कभी कोई चर्चा नहीं हुई।

साहित्यकार महोदय का नाम अखबारों में कभी-कभी पढ़ने को मिलता था, किसी साहित्य गोष्ठी की अध्यक्षता करते तो कभी किसी साहित्य संस्था के अध्यक्ष चुने जाते थे, कॉफी हाऊस में उनकी नियमित रूप से शाम को उपस्थिति पायी जाती थी। मैंने एक बार उनसे पूछा कि आपकी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हुई होंगी, तो कभी पढ़ने के लिए दीजिए। पढ़ने के पश्चात् मैं लौटा दूँगा। उनका उत्तर था कि अभी कोई पुस्तक छपी नहीं है, कई पाण्डुलिपियाँ तैयार हैं, शीघ्र छपने वाली हैं। मैंने कभी किसी अखबार या पत्रिका में भी उनकी कोई कविता या लेख छपा हुआ नहीं देखा था। समझ नहीं आता था कि ये महाशय कैसे साहित्यकार हैं तथा किस विधा में क्या लिखते हैं?

मेरे मन में उत्सुकता हुई कि इनके बारे में पता

किया जाना चाहिए। कई साहित्यकार लोगों से पूछने पर पता चला कि इनके पास एक मात्र कविता है, जिसे वह स्वरचित बताते हैं, उसे ही आग्रह करने पर जगह-जगह सुना चुके हैं। शायद यही उनकी साहित्यिक पूँजी है। ये महाशय साहित्य के साथ राजनीति में भी खासा दखल रखते हैं और राजनीति के कारण ही कई साहित्यिक संस्थाएं इनकी जेब में हैं और इन संस्थाओं को मिलने वाली सरकारी सहायता इनकी आय का साधन है। नवोदित कवियों व साहित्यकारों से पैसे लेकर सम्मान कराने का काम, पुस्तकों के विमोचन के कार्यक्रम आयोजन आदि का काम ये कराते ही रहते हैं। खासतौर से सरकारी अधिकारी व व्यापारी आदि जो साहित्य में रुचि रखते हैं, वे इनके चंगुल में आसानी से फँस जाते हैं।

सरकार ने साहित्यकार की पहली पुस्तक प्रकाशन पर आर्थिक सहायता देने की योजना निकाली। आचार्य प्रज्ञ जी ने अपनी पुस्तक के लिए धन राशि स्वीकृत करा ली। अब समस्या यह थी कि पुस्तक की पाण्डुलिपि थी ही नहीं, पुस्तक कैसे छपती? उन्होंने मेरी सहायता माँगी, मैंने उन्हें सलाह दी कि आजकल इन्टरनेट पर सब उपलब्ध है, आप वहीं से सामग्री लेकर पाण्डुलिपि तैयार कर लें और उसे पुस्तक के रूप में छपवा लें, फिर क्या हुआ, मुझे पता नहीं पर कुछ दिन पश्चात् उनकी पुस्तक के विमोचन कार्यक्रम का निमन्त्रण पत्र मिला। विमोचन कार्यक्रम भव्य था, स्थानीय मंत्रीजी ने पुस्तक का विमोचन किया और पुस्तक की तारीफ में कई लोगों ने भाषण दिए।

अब वे पूर्णतः स्थापित साहित्यकार बन गए थे, शहर में व प्रदेश में उनका मान बढ़ गया था, वे क्या करते थे यह तो पता नहीं पर यह निश्चित था कि

आर्थिक दृष्टि से स्थिति मजबूत नहीं थी, लोगों से अक्सर धन उधार माँगते रहते थे, 'लक्ष्मी और सरस्वती दोनों साथ-साथ कहाँ रहती हैं' यह उनका तकिया कलाम था, एक दिन अचानक उनका भाग्योदय हो गया। सरकार ने कोई साहित्यिक समिति का गठन किया और आचार्यप्रज्ञ जी को उसका अध्यक्ष बना दिया। यह पद वैतनिक था तथा कार्यालय, टेलीफोन, गाड़ी की सुविधा उपलब्ध थी। सरकारी नौकरी में पचास झमेले होते हैं। उनकी शैक्षणिक योग्यता व जन्मतिथि का प्रमाण माँगा गया। यह उनके पास था नहीं। इसके बिना पद ग्रहण हो नहीं सकता था। आचार्यप्रज्ञ जी परेशान हो गए। मुझसे सलाह माँगी तो मैंने बता दिया कि ये कागज तो आपको देने ही पड़ेंगे। आपने जहाँ भी पढ़ाई की है, वहाँ से जाकर कागज निकलवा लीजिए और जमा करवा दीजिए।

इनका बड़ा पद जिन्हें जिंदगी में पहली बार मिला था, उसे छोड़ना सम्भव न था। मैंने उन्हें यह भी सलाह दी कि किसी नेता से संपर्क कर लें, उन लोगों के प्राईवेट स्कूल चलते हैं, वे आपकी समस्या का समाधान कर देंगे। उन्होंने ऐसा ही किया होगा, उनका काम हो गया और वे सरकारी साहित्य समिति के अध्यक्ष पद पर आसीन हो गए। आज उनके नाम से कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा उनकी पुस्तकें सरकारी पाठ्यक्रम में भी शामिल हो गई हैं। स्वनामधन्य आचार्यप्रज्ञ जी प्रदेश में साहित्य के अधिष्ठाता बन कर उभरे हैं और राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचने वाले हैं, जबकि यह रहस्य मेरे साथ-साथ कई लोग जानते हैं कि वास्तव में साहित्य सृजन से उनको कुछ लेना-देना नहीं है, जिन्होंने आजीवन कुछ लिखा नहीं, उनमें बुढ़ापे में अचानक सृजक ऊर्जा आ गयी होगी, इस पर विश्वास करना सम्भव नहीं है। ○○

सम्माननीय रचनाकारों से निवेदन

- * रचनाएँ दो प्रतियों में टाईप की गई अथवा सुस्पष्ट लिपि में कार्यालय महालेखाकार द्वितीय के हिन्दी कक्ष में उपलब्ध कराई जाएं अन्यथा रचना किसी कारण से गुम होने पर हिन्दी कक्ष उत्तरदायी नहीं होगा।
- * रचनाएं मौलिक, अप्रकाशित तथा स्वयं के हस्ताक्षर युक्त होनी चाहिए। रचनाकार का पूरा नाम, उसका पद तथा स्थायी क्रमांक आदि की जानकारी रचना के अंत में स्पष्ट रूप से अंकित की जानी चाहिए।
- * अहिन्दी भाषी महानुभावों की रचनाओं का विशेष स्वागत है। उनका सहयोग हमारा मार्गदर्शन करेगा। वर्तनी त्रुटि की चिंता न करें। उसे यथा संभव परिष्कृत कर भेजें। रचना में कांट-छांट करने या सम्पूर्ण रचना अस्वीकृत करने का सम्पादक मण्डल को पूर्ण अधिकार है। इस सम्बंध में कृपया कोई पूछताछ या पत्राचार न करें।
- * आपकी उत्कृष्ट स्तरीय रचनाओं का स्वागत है।
- * रचना की कार्बन प्रति, मूल प्रति के रूप में स्वीकार-योग्य नहीं होगी।

* सम्पादक



ढलता सूरज

डॉ. कृष्णकांत चौहान 'नीर'

अतिथि रचनाकार

आज राधेश्याम जी पूरे पैंसठ के हो चले थे। समय की पटरी पर जीवन की रेलगाड़ी सुख-दुख अनगिनत स्टेशनों को पीछे छोड़ते हुये कब इतनी दूरी तय कर चुकी थी, पता ही नहीं चला।

कभी सुख की शीतल छाया का अनुभव किया तो कभी दुःख की तेज धूप को सहज भाव से स्वीकार किया। स्वनिर्मित कुछ विशेष सिद्धांतों पर आत्म केन्द्रित होकर जीवन-यापन करने में ही उनकी आस्था समाहित थी। कठिनाइयों से हमेशा हँसते-गाते निबटना उनके सुदृढ़ व्यक्तित्व की ही अनूठी पहचान थी। कभी किसी मुसीबत को खुद पर हावी नहीं होने दिया, किन्तु अब ना जाने क्यों एक क्षीणता का भाव, उनके दर्पण रूपी मन अप्रकट-सी थकान और नीरसता बिना बुलाये अतिथि के समान सदैव उनके मुख मण्डल पर विद्यमान रहती क्योंकि कुछ वर्ष पूर्व सेवानिवृत्ति हो जाने के बाद अब ना तो वो पहली जैसी दिनचर्या ही रही थी, और ना ही पहले जैसे संपर्क। जो था, जैसा भी था, बस हो रहा था।

यह शायद उनका पहला जन्मदिन था, जब किसी की कोई शुभकामना, कोई बधाई या कोई संदेश इस अवसर पर उन्हें ना मिले हों, लेकिन अब उन्हें इस बात की किसी से कोई अपेक्षा नहीं थी और अब वैसे भी उन्हें इस अवसर पर याद करने वालो कोई नजर नहीं आता था। आज के इस भाग-दौड़ से भरे जीवन में किसके पास इतना समय था, जो आकर उनसे बात करे, उन्हें समझे।

बैठक में पत्नी वसुंधरा के धूल चढ़े आदमकद तैलीय चित्र के सामने खड़े होकर वो यही सोच रहे थे। बैठक के फूलदान में रोज रखे जाने वाले फूलों से वहाँ



अब भी एक हल्की सी महक फैली हुई थी। बैठक के बीचों-बीच एक शानदार गोल टेबल सलीके से रखी हुई थी। जिस पर रखे अखबार, कागज आदि वहाँ प्रवेश करने वाली के झोंके के कारण बीच-बीच में 'खड़-खड़' की आवाज कर उठते थे, जिससे वातावरण की स्तब्धता अनिश्चित क्षणों के लिए टूट जाती। इसी टेबल की दाहिनी ओर वाली दीवार पर प्राकृतिक दृश्यों वाली छोटी-छोटी दो तस्वीरों के बीच लगभग तीस-पैंतीस वर्ष पुरानी श्वेत-श्याम तस्वीर लगी थी, जिसमें वो वसुंधरा देवी के साथ थे। जब कभी वे अपने मन की पुस्तक में सहेजे स्मृतियों के पन्ने पलटते तो एक अध्याय ऐसा भी सामने आता, जो इस श्वेत-श्याम तस्वीर में छिपे अनेक रंगों के भाव-विभोर कर देने वाले अतीत का बखान करता था। बैठक की बाँई ओर वाली दीवार पर एक छोटी सी कलाकृति लगी हुई थी, जो उस दीवार के खालीपन को दूर करने का प्रयास करती प्रतीत होती थी। इस तस्वीर के ठीक ऊपर एक दीवार घड़ी लगी थी जिसमें शाम के साढ़े चार बज रहे थे। बैठक को अन्य कमरों से जोड़ता एक दरवाजा था, जो बाहर की ओर खुलता था।

अभी वे वसुंधरा देवी के चित्र को एकटक निहारते हुए किसी सोच में डूबे ही थे कि तभी दीवार घड़ी ने पांच बजने की ध्वनि संकेत देकर उनकी तंद्रा तोड़ी। फिर कुछ संभलकर वे अपने कमरे की ओर चल

दिये थे। तभी उनके वृद्ध नौकर रघु ने वहाँ अपनी उपस्थिति दी और श्यामजी को कुछ उदास देखकर आत्मीयता के साथ बोला, 'बाबूजी!'

— 'हाँ रघु! कहो क्या बात है?'

— 'बाबूजी, लगता है आप कुछ परेशान हैं।'

— 'नहीं रघु! ऐसी कोई बात नहीं है।'

— 'तो फिर चेहरे पर ये उदासी कैसी?'

— 'अरे पगले! मेरे चेहरे की खुशी, मेरे चेहरे की इन झुर्रियों के पीछे छिप जाये तो मैं क्या कहूँ? किसी स्वच्छंद के चेहरे जैसी आभा अब तो भला बाजार में मिलने से रही, हा.... हा.... हा....!'

एक कृत्रिम ठहाका लिये वह खिलखिलाकर हँस पड़े। उनकी उस ठहाकेदार हँसी से रघु बखूबी परिचित था। फिर उसने विषय बदलते हुए नम्रता के साथ पूछा, 'तो फिर आज खाने में क्या बनाऊँ? क्योंकि आज आपका जन्मदिवस.....।' उसने जान-बूझकर अपना वाक्य अधूरा छोड़ा।

'अरे भई अब बस भी करो। मुझसे ये आडम्बर अब और न होगा.... हाँ यदि पिला सको तो एक प्याली गरम जाय पिला दो, बस और कुछ नहीं।'

'जी अच्छा!' कहकर वह वापस रसोई में लौट गया जहाँ से कुछ देर बाद वह चाय लेकर उनके कमरे में जा पहुँचा था। फिर वहीं अस्त-व्यस्त पड़ी सामग्री को पुनः व्यवस्थित कर वहाँ से जा चुका था।

रघु उनका वर्षों पुराना नौकर था, जिसे उन्होंने घर के अन्य सदस्यों जैसा प्रेम-स्नेह दिया था। वे जब भी किसी विशेष अवसर पर अपने परिजनों हेतु कोई उपहार लाते तो उसे भी कुछ ना कुछ लाकर देते। कितना खुश हुआ करता था वह यह देखकर। उन्हें आज भी अच्छी तरह याद है वो दिन जब बचपन में ही रघु के साथ हो जाने पर उनके पिताजी उसे गाँव से अपने साथ यहाँ लेकर आये थे। रघु और उनकी आयु में कोई विशेष अंतर था नहीं सो वह उनके बालसखा के रूप में शीघ्र ही उनके साथ घुल-मिल गया था। रघु भी उनकी मन लगाकर सेवा करता। एक बार जब बचपन में उनके सख्त बीमार हो जाने पर रघु ने उनके स्वस्थ हो जाने

तक बिना अन्न-जल ग्रहण किये दिन-रात जाककर उनकी सेवा की थी। तब एक आदर्श स्वामीभक्त होने का प्रमाण प्रस्तुत किया था उसने। लगभग अपना जीवन ही तो समर्पित कर दिया था उसने इस परिवार के लिये।

जब तक वसुंधरा देवी जीवित थीं, तब तक घर के सभी लोग कितना ख्याल रखा करते थे राधेश्यामजी का। किसी छोटी-सी वस्तु के लिए उन्हें कभी परेशान नहीं होना पड़ा। सब कुछ बिना माँगे सहज उपलब्ध हो जाता था और वो भी समय पर, किंतु तीन वर्ष पूर्व हुए हृदयाघात के कारण हुई वसुंधरादेवी की मृत्यु से उनकी कमी प्रायः अनुभव हुआ करती थी। एक रघु ही तो था जिसने उनके मर्म, उनकी पीड़ा को समझा था। उसी के बंधाये ढाँढस और प्रयासों का यह परिणाम था कि अपने नीरस और अर्थहीन हो चुके जीवनपथ पर एकांत भाव से चले जा रहे थे वो। वसुंधरादेवी के बाद घर के लगभग समस्त दायित्वों का भार रघु के बूढ़े कंधों पर आ गया था। एक रघु ही तो था जो परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल पूरी तन्मयता से करता था, वरना इस जमाने में ऐसा विश्वसनीय सेवक ढूँढना भूसे के ढेर से सुई ढूँढने के समान होता है।

उनके पलंग से सटी हुई जिस टेबल पर उन्होंने चाय पीकर प्याली रखी थी, उसी टेबल पर मूल्यवान सुनहरी फ्रेम में सुसज्जित वह तस्वीर भी रखी हुई थी जिसमें परिवार के सारे सदस्य उपस्थित थे। उसी तस्वीर को वह अपने हाथों में लेकर उसे तरह छू रहे थे मानो तस्वीर रूपी पिंजरे में ऊँची उड़ान भरने की तीव्र अभिलाशा लिये किसी पंछी के समान कैद, उस दृश्य को अतीत के सशक्त बंधनों से मुक्तकर देना चाहते हों। तस्वीर के इस दृश्य में वह पत्नी वसुंधरादेवी के साथ बैठे थे और दोनों पुत्रों शैलेश एवं राहुल के बीच दोनों पुत्रवधुयें रेणु और सुधा और पुत्री अश्लेशा उनके ठीक पीछे खड़ी थी। एक प्राकृतिक मुस्कान सबके चेहरों पर विद्यमान थी।

बड़ा लड़का शैलेश शहर के एक प्रतिष्ठित अस्पताल में एक कुशल सर्जन था। वहीं साथ में उसकी पत्नी रेणु भी सहायक चिकित्सक के रूप में कार्यरत थी। वे दोनों अक्सर अपने-अपने काम की वजह से काफी उलझन में रहते। अभी हाल ही में उसे देश के एक

प्रसिद्ध निजी अस्पताल में काम करने का प्रस्ताव मिला था जिसे उसने सहर्ष स्वीकार भी कर लिया था। राधेश्याम जी के तमाम समझाने के बावजूद वह वहाँ जाने की जिद पर अड़ा रहा था। फिर उन्होंने उससे पूछ ही डाला था, 'तो क्या तुम अपना इरादा पक्का कर चुके हो शैलेश?'

'हाँ बाबूजी! मैं यह विशेष अवसर हाथ से जाने नहीं देना चाहता।'

'तो फिर ठीक है, यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो मैं तुम्हारे विकास के रास्ते में बाधक बनना नहीं चाहूँगा... वैसे तुम्हें जाना कब है?'

'बस अगले हफ्ते।' शैलेश के ये तीन शब्द सुनकर थम ही तो गए थे वो कुछ क्षणों के लिए और फिर कुछ संभलकर उन्होंने आखिर उससे कह दिया था, 'ठीक है शैलेश, जाने की तैयारी करो।' इतना कहकर वह अपने कमरे की ओर चल दिये थे और फिर वो समय भी आ गया जब उसे अपनी बीवी-बच्चों सहित वहाँ जाना था। कितने उदास थे सब उस दिन। उन्हें लगा था कि यदि वसुंधरादेवी आज जीवित होतीं तो शायद उसे कदापि न जाने देतीं। उसके जाने के बाद शुरू-शुरू में उसके पत्र और फोन कॉल नियमित आते रहे, लेकिन बाद में यह सिलसिला भी धीरे-धीरे बंद हो गया था।

छोटा लड़का राहुल और उसकी पत्नी सुधा एक फर्म में साझेदार थे। फर्म के व्यावसायिक क्रियाकलापों और फिर इस संबंध में अक्सर होने वाली पार्टियों की व्यस्तता में वो दोनों इतना तक भूल जाते कि वो दो बच्चों के माता-पिता भी है। बढ़ती व्यस्तता के कारण कभी वे देर रात लौटते तो कभी लौटते भी नहीं। महीने में अक्सर दो-एक बार उन्हें बाहर भी जाना पड़ जाया करता था, जिससे बच्चों की परवरिश भी दिन-प्रतिदिन प्रभावित होती जा रही थी। इस संबंध में जब एक दिन राधेश्यामजी ने राहुल से चर्चा की तो उसने सिर्फ यही कहा, 'बाबूजी! हम जो कुछ कर रहे हैं उनके लिये ही तो कर रहे हैं, और अब वैसे भी सेवानिवृत्त हो जाने के बाद आपके पास भी समय ही समय है। चाहे तो आप भी अब बच्चों को भरपूर समय दे सकते हैं।'

'हाँ बाबूजी! फिलहाल तो मुझे भी यही एक रास्ता नजर आता है।' पास ही खड़ी सुधा ने राहुल के

कथन पर अपनी सहमति जताई। बैठक में खड़े राधेश्यामजी से इतना कह वो दोनों वहाँ से चले गये थे, उनकी कोई प्रतिक्रिया सुने बगैर, शायद कहीं जाने के लिये उन्हें देर हो रही थी।

'तुम्हें क्या पता राहुल धन-दौलत की इस अंधी दौड़ में तुम अपने बच्चों को उस स्नेह-दुलार से वंचित कर रहे हो, जो मैंने तुम्हारे बचपन में तुम्हें दिया था। तुम क्या जानो, फूल का रिश्ता जड़ की निकटवर्ती शाखा से कहीं अधिक स्नेहपूर्ण होता है, जिस पर वह खिलता है।' उन दोनों के जाने के बाद वह अपने आपसे कुछ बड़बड़ाये।

पुत्री अश्लेशा राहुल से बड़ी थी। वह भी जब कभी अपनी ससुराल से यहाँ आती तो अक्सर उन दोनों को इस संबंध में समझाया करती थी, लेकिन कुछ दिन संभल जाने के बाद बाद परिणाम वही रहता। कितनी धूमधाम से उसका विवाह किया था उन्होंने वसुंधरा देवी के साथ मिलकर। सचमुच कितनी मधुर और करुणामयी संध्या थी वो, जब उन्होंने अपनी नम आँखों से विदा किया था उसे। कितने ही मौन क्षण उस भावपूर्ण दृश्य के साक्षी बने हुए थे। यह सब सोचते-सोचते अनायास ही कुछ अनचाहे आँसू उनकी पलकें भिगो ही गये और उन्हीं आँसुओं में से कुछ उसी तस्वीर पर गिर चुके थे जो अब भी उनके हाथ में ही थी। तस्वीर के इस दृश्य को देखकर एकाएक ही वो दिन उनके मानस पटल पर चित्रित होने लगता है, जब उनके लाख मना करने पर भी शैलेश, राहुल और अश्लेशा ने उन्हें उनका पचासवाँ जन्मदिन एक बड़े कार्यक्रम के रूप में मनाने हेतु राजी कर लिया था। तत्पश्चात जल्द ही सारे खास रिश्तेदार, परिचितों और शुभचिंतकों को आमंत्रित कर दिया गया था। पूरे घर में नये सिरों से सजावट करने के लिए गृह सज्जा सामग्री की खरीददारी शुरू हो गई। सभी अपनी अपनी व्यस्तता को त्याग कर हर प्रकार से कार्यक्रम की तैयारियों में बढ़-चढ़कर अपना योगदान देते और फिर वह घड़ी भी आ गई, जिसकी प्रतीक्षा सभी उत्सुकतावश कर रहे थे। सुबह से शैलेश, अश्लेशा और राहुल अपने-अपने पूर्व निर्धारित कार्यों में व्यस्त हो गए। कोई कुछ सामान लाकर रखता तो कोई कुछ व्यवस्था करता। किसी को आपस में बात करने तक की फुर्सत नहीं थी। पूरे घर को फूलों से सजाया गया था उस दिन। तरह-तरह के पकवान बनाये गये थे।

फिर शाम होते ही सारा घर झिलमिलाती रंगीन रोशनियों से नहा उठा था। वहाँ बढ़ती चहल-पहल किसी उत्सव का आभास देती थी। कितने आत्मसंतुष्ट और हर्षित हुए थे वह यह सब देखकर। आज ही उन्हें आभास हुआ कि सचमुच उनके बच्चे अब इतने बड़े हो गए हैं, जो अब इतना सब कुछ स्वयं कर सकते हैं। जब शैलेश ने उनके पास आकर पूछा, 'बाबूजी! आज आप खुश तो हैं ना....?'

'हाँ शैलेश, आज मैं बहुत खुश हूँ.... सचमुच मैं खुश हूँ!' फिर वह उनकी नम आँखों में झाँकते हुए बोला, 'तो फिर ये आँसू कैसे?'

'ये?' ये तो खुशी के आँसू हैं बेटे... तुम लोगों ने जो खुशी आज मुझे दी है, उसे मैं कभी नहीं भुला सकता। ... शायद कभी नहीं!' अभी उन दोनों के मध्य यह सब बातें चल रही थी कि तभी वसुंधरादेवी ने वहाँ प्रवेश किया। फिर वह बोल उठी थी, 'अरे भई बाप-बेटे के बीच क्या कानाफूसी चल रही है, जरा मैं भी सुनूँ।' राधेश्यामजी ने अपनी आँखों की नमी को छिपाकर विनोदी भाव में बोले, 'अरे आओ भाग्यवान, हम तुम्हारे ही बारे में चर्चा कर रहे थे।'

'मेरे बारे में!'

'हाँ भई! तुम्हारी वर्तमान आयु के बारे में....।'

'मेरी वर्तमान आयु के बारे में?' फिर वह इतराते हुए बोली, 'अरे मेरी वर्तमान आयु तो चालीस वर्ष है, किंतु क्या मैं आज चालीस की लगती हूँ?'

'जी नहीं! आज बिल्कुल नहीं लगती, परंतु... जब चालीस की थी तब जरूर लगती थीं, हा...हा....हा....।' राधेश्यामजी की वही ठहाकेदार खिलखिलाहट से सारा वातावरण गूँज उठा था और वसुंधरादेवी 'ऊँह' कहकर रूठते हुए वहाँ से चली गई थी। वैसे वो भी आज काफी रोमांचित थीं इस कार्यक्रम की रौनक देखकर। कितना संतोष हो रहा था उन्हें। इस खुशी को वो अपने पिछले जन्म में किये गये किसी पुण्य का प्रतिफल मान रही थीं और उनके यह सब सोचने के पीछे उनकी धार्मिक प्रवृत्ति और आस्था थी, क्योंकि वे इस जन्म में मिलने वाले प्रत्येक सुख-दुख को पूर्व जन्मों में किये गये कर्मों को ही उत्तरदायी ठहराया करती थीं। इस खुशी को भी उन्होंने इसी आधार पर मूल्यांकित किया था।

कार्यक्रम में आये मेहमानों से बधाई, शुभकामनायें आदि मिलने और फिर उनकी आवभगत के बाद देर रात वो कार्यक्रम समाप्त हो गया था जो उनके जीवन के पचासवे वर्ष अविस्मरणीय अनुभव था।

कितनी उमंग-तरंग से भरी होती थी उनकी दिनचर्या! किंतु आज उस स्थिति से एकदम विपरीत दिशा में आ खड़े हुए थे राधेश्यामजी। अभी परसों की ही तो बात थी, जब अपने कमरे से बाहर निकलकर बरामदे की ओर जाते समय राहुल और सुधा के मध्य पिछले महीने रखे गये नौकर के संबंध में चर्चा के कुछ ऊँचे स्वर उन्हें सुनाई दे गये थे। सुधा कहे जा रही थी, 'देखो राहुल! तुमने इस नये नौकर को रखकर फिजूलखर्ची की है। यहाँ पहले ही इतने खर्चे लगे हैं और उस पर ये खर्चा और....।'

'लेकिन सुधा वह नया नौकर रघु काका का हाथ बंटता है जिससे बाबूजी को भी कुछ आराम....।'

'तुम समझते क्यों नहीं हो राहुल?' सुधा का स्वर अब कुछ तेज था। 'वो नया नौकर वही काम करता है जो स्वयं बाबूजी भी कर सकते हैं, जैसे बाजार से घर का सामान लाना, बच्चों को स्कूल लाना ले जाना, बगीचे में पानी देना, घर के छोटे-मोटे काम में रघु काका का हाथ बंटाना वगैरह वगैरह....।' यह सुनते ही राहुल ने उसका कुछ विरोध किया, लेकिन सुधा के आगे उसकी एक न चली और फिर अगले ही दिन उसका अब तक का हिसाब कर देने पर दोनों की सहमति बन चुकी थी। हालाँकि इस सहमति में राहुल की सहमति का प्रतिशत नगण्य ही था। कितना आहत हुए थे वह सुधा की यह बातें सुनकर, उन्होंने सदैव ही उसे अश्लेशा की तरह ही तो स्नेह दिया था। उन्होंने कभी सोचा भी न था कि सेवानिवृत्ति के बाद घर में उनकी उपयोगिता इस रूप में आँकी जायेगी। फिर बाद में इस बात को भुलाकर वे स्वयं ही रघु के मना करने पर उसके साथ हाथ बंटाने लगे थे और इसी कारण वे आज अपना जन्मदिवस होते हुए भी वो बैठक में बेतरतीब रखे सामान आदि को सलीके से रख रहे थे। यह सब सोचते सोचते राधेश्यामजी को बहुत समय हो गया था और उनके हाथ में अब तक थमी उसी तस्वीर पर गिरे वो आँसू उनके उदास वर्तमान की तीक्ष्ण ऊष्णता के कारण वाष्पित हो चुके थे। अभी वो उस तस्वीर को यथास्थान रख ही रहे

थे कि बैठक में रखा फोन घनघना उठा। बैठक में पहुँचकर जैसे ही उन्होंने फोन उठाया तो उनकी हैलो की प्रतिक्रिया में जो आवाज उन्होंने सुनी उसे वो तुरंत पहचान गए। फोन उनके वर्षों पुराने व्यंग्यकार मित्र कन्हैया का था, जिससे मिले उन्हें काफी समय हो चुका था। आज के दिन वो कहीं भी होते तो राधेश्यामजी को उनके जन्मदिवस की बधाई अवश्य देते। आज भी उन्होंने इसी मंतव्य से फोन करके बधाई दी जिसके उत्तर में राधेश्यामजी ने कहा, 'धन्यवाद कन्हैया!!' फिर उदास होकर वो बोले, 'वैसे ये परंपरा जो तुम आज तक निभा रहे हो, अब उसका मेरे लिए कोई औचित्य नहीं है, क्योंकि मेरी अपेक्षा तुम यदि किसी युवा को इस योग्य समझो तो यह अधिक श्रेयस्कर होगा।'।

यह सुनकर कन्हैयालालजी चुटकी लेते हुए बोले, 'लेकिन मेरे लिए तो तुम आज भी वही युवा राधे हो।'।

'हा...हा....हा.' राधेश्यामजी ने चिरपरिचित ठहाका लगाया, जिसे सुनकर कन्हैयालालजी भी उनके साथ खिलखिलाकर हँस पड़े। फिर शब्दों की लड़खड़ाहट के साथ वो बोले, 'तुम नहीं सुधरोगे कन्हैया,

अच्छा कहो तुम कैसे हो?'

मैं तो एकदम सकुशल हूँ... किंतु तुम अपनी कहो बंधु!

'मैं?' कुछ रुककर वो बोले, 'मैं भी तुम्हारी तरह ठीक हूँ... हाँ कन्हैया! मैं आज भी खुश हूँ.... शायद बहुत खुश हूँ।'।

यह कहते हुए ही राधेश्यामजी ने अनमने मन से रिसीवर रख दिया, लेकिन उनके नेत्रों में छलक आए वो आँसू उनके द्वारा अपने मित्र को कहे इन वाक्यों का सख्ती से विरोध कर रहे थे। फिर एक अंतर्द्वन्द्व उनके अंदर हाहाकार कर उठा क्योंकि जीवन भर सत्य की राह पर चलकर लोगों में आदर्श के रूप में स्थापित हो जाने वाले राधेश्यामजी अपनी वर्तमान उपेक्षित दशा के कारण असत्य का सहारा लेने पर विवश हो गए थे। बैठक में लगे वसुंधरादेवी के उसी चित्र को अपने सजल नेत्रों से देखते हुए वो लगातार अपने आप से पूछे जा रहे थे – 'कन्हैया से तो मैंने कह दिया कि मैं सकुशल हूँ.... बहुत खुश हूँ.... परंतु..... परंतु क्या..... सचमुच.....क्या मैं खुश हूँ?' ○○

“जिन्दगी खजूर है”

काला धुआँ और तपतपाती धूप है,
सांसे थम गयी हैं पर दिल मजबूर है।
चमचमाते नोटों के तमतमाते रौब ने,
बचपन भुला दिया, जिन्दगी खजूर है।

खाहिशें कहूँ या आसमां के बादल,
दो घूंट के इन प्यालों में, जिन्दगी मगरूर है।
खाबों की मनमानी ने, कि मंजिल की रंगदारी ने,
बचपन भुला दिया, जिन्दगी खजूर है।

ये कैसी भीड़ है, पता नहीं किसे अपना कहूँ,
राज को राज ही रहने दूँ, या आप ही बता दो हुजूर।
काम पाने की कामदारी ने, कि नाम कमाने की नामदारी ने,
बचपन भुला दिया, जिन्दगी खजूर है।



– हेमन्त गोयल



रविवार का वह यादगार दिन



अभी पिछले हफ्ते की बात है।

रविवार की सुबह रिमझिम बारिश, ठण्डी हवायें, और कितना सुहाना ये मौसम। चूंकि छूट्टी का दिन था और ग्वालियर शहर का ये मौसम मुझे आज सुकून की राह दिखा रहा था।

सबसे पहले चाय पीने का मन हुआ। किचिन में जाकर बढ़िया अदरक वाली चाय बनाना शुरू किया। फिर चाय उबलने रखी और अपने पसंदीदा कुमार सानू—अलका याग्निक के नब्बे के दशक के गाने फोन से वूफर में चलाकर सुनने लगा।

चाय हद से ज्यादा उबल चुकी थी और उसकी महक बाहर वाले हॉल तक आ रही थी। फटाफट जाकर चाय को संभाला और गिलास भर कर हॉल में सोफे पर बैठ गया।

बाहर बारिश की बूंदें अन्दर चाय की चुस्कियां और साथ में साजन फिल्म के बजते हुए गाने कान में शहद घोल रहे थे।

बैठे—बैठे अचानक ना जाने कब मैं बचपन की

उन मीठी यादों में खो गया, जब ऐसी ही बारिश में हम सब दोस्त अपनी—अपनी साइकिल लेकर मस्ती करने घर से निकल जाया करते थे।

आज बड़े दिनों के बाद न जाने क्यों वैसे ही इस बारिश में भीगने का मन कर रहा था। पर अब न तो बचपन है, ना ही साथ में वो बचपन के मेरे यार और न मेरी प्यारी साइकिल।

सुबह के ग्यारह बज चुके थे। मैं दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर फिर से सोफे पर जा बैठा। बारिश थोड़ी कम हो गयी थी। पर इस दिलकश मौसम में मुझे बचपन की याद न जाने कहां से आ गई। चेहरे पर ऊदासी छा गई। क्या यह बारिश अब निहारने के लिये ही है। काश! मैं फिर से बचपन में लौट जाऊं और बिट्टू (बिट्टू मेरे बचपन का दोस्त) के साथ बाजार से साइकिल से दौड़ लगाऊं। इस मनोस्थिति में बैठा हुआ मैं व्हाट्सप पर मैसेज पढ़ रहा था कि अचानक ऑफिस के एक मित्र का फोन आया। अधिकांशतः हर सप्ताहांत हम दोस्त मॉल घूमने निकल जाया करते हैं।

इस बार उसने मॉल न जाकर कुछ अलग प्रस्ताव रखा और उसने बताया ग्वालियर शहर में अभी हाल ही में कोई “याना” साइकिल राईडिंग सर्विस शुरू हुई है, क्यों न आज इसका लुप्त उठाया जाये। इतना सुनते ही मैंने फटाक से कहा “क्यों नहीं, जरूर”। ऐसा लगा जैसे “जहां चाह वहां राह” वाली कहावत सिद्ध हो रही है यह साइकिल चलाने का प्रस्ताव हमने अपने बाकी 06 मित्रों के पास रखा। यकीन मानों किसी ने भी मना नहीं किया। और हम सभी मित्र आज फिर से अपने पुराने दिनों को जीने के लिये अपने-अपने फ्लैट से निकल गये। हरीशंकरपुरम अपने एक मित्र के फ्लैट पर इक्कट्ठे हुये और वहां से माधव नगर चौराहा तक पैदल जाकर दो ऑटो बुक करके उस साइकिल सर्विस के गोदाम पर जा पहुंचे, जो कि सिटी सेंटर पर स्थित था। साइकिल सवारी के लिये जरूरी औपचारिकता पूरी करने के बाद हम लोग अपनी-अपनी आवंटित साइकिल लेकर एक साथ झुण्ड बनाकर ग्वालियर भ्रमण पर निकल पड़े। ट्रिंग-ट्रिंग की घंटी बजाते हुये उस गियर वाली साइकिल पर पैडल मारते हुये ऐसी प्रतिक्रिया दे रहे थे, जैसे हमारी कोई खोई हुई चीज हमें वापस मिल गई हो।

सबसे पहले ट्रैफिक से निकलकर हमने जीवाजी विश्वविद्यालय के गलियारे की तरफ रुख किया। फिल्मी गाने गाते हुये, हंसी ठिठोली करते हुये, जीवाजी विश्वविद्यालय कैम्पस से आगे मिलेनियम प्लाजा रोड पहुंचे।

हर वह व्यक्ति जो हमें समूह में साइकिल चलाते हुये देख रहा था, उसके चेहरे के मंद मंद खुशी वाले भाव बता रहे थे कि वह भी हमारे साथ इस सफर में जाना चाहता है। दोपहर के 12 बज चुके थे। सुबह से पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं गया था। पेट में चूहे कूदने लगे थे, तो वहीं पास ही एक कैफे पर रुके। वेज रोल, सेन्डविच और कोल्डड्रिंक का आनन्द लिया, और फिर आगे के सफर के लिये तैयार थे। इस खुश मिजाज मौसम में साइकिल के पहिये न्यू कलेक्टेड भवन की तरफ बढ़ चुके थे। वहां पहुंच कर ठण्डी हवाओं के थपेड़े सीधे गालों पर पड़ रहे थे, जो अतुलनीय उत्तेजना और रोमांच की अनुभूति दे रहे थे। उस चढ़ाई जगह पर हम लोग आधे रास्ते साइकिल से उतरकर साइकिल घसीटते हुये पैदल चले। फिर रुके और इस यादगार सफर को यादों में संजोये रखने के लिये हमने मोबाईल

से कुछ तस्वीरें लीं। साफ सड़क, दोनों तरफ हरियाली और ऊपर से ये भीगा आसमान प्राकृतिक सौन्दर्य से ओतप्रोत नजारा दिल को बेहद प्रसन्न कर रहा था।

वाकई बहुत खूबसूरत तस्वीरें कैमरे में कैद हुईं। अभी तक तो सुलभ रास्तों से हम गुजरे थे, पर अब हमारी योजना चुनौतियों वाले रास्ते पर चलने की थी। इसलिये हम वहां से कच्चे रास्ते से होते हुये रायरू – डबरा बायपास (ए.एच. 43) पर निकल पड़े थे। थोड़ी प्यास और थकान का अनुभव होने लगा, इसलिये बायपास पर हम कोई ढाबे की तलाश में थे, जहां बैठ कर चाय-पानी पी सकें। लगभग 1 कि.मी और चलने के बाद हमें वहां “कृष्णा ढाबा” का बोर्ड दिखाई दिया। बायपास रोड पर जो ढाबे होते हैं, वहां अक्सर बैठने के लिये खाट (चारपाई) बिछी होती है। चारपाई पर हम आठ लोगों में से कोई लेट गया और कोई बैठने के लिये जगह ढूँढ़ रहा था। बढ़िया चाय-पानी पीने के बाद हमने आगे की योजना बनाई। लगभग 10 कि.मी. चलने के बाद हमें लगा कि जितनी दूर आये हैं, उतनी ही दूर लौटकर भी जाना है, तो और आगे न चलते हुये यही से “यू-टर्न” लेना चाहिये। हमने वहां से “यू-टर्न” लिया और शहर वापसी की दिशा में निकल पड़े। आते हुये रास्ते में हमारे चेहरों के भाव बता रहे थे कि हमने जोश-जोश में इतने वर्षों के बाद कुछ ज्यादा ही साइकिल के पैडल मार लिये। पैर की मांसपेशियों पर काफी अरसे बाद जोर पड़ रहा था और वह आराम मांग रही थीं।

सिटी सेंटर पर वापस आकर हमने साइकिल केन्द्र पर जमा कराई और वहीं से ऑटो पकड़कर हरीशंकरपुरम अपने फ्लैट पर लौट आये। इस योजना को सफल बनाने के लिये ऑटों में सभी ने एक-दूसरे को शुक्रिया कहा और निकट भविष्य में फिर से ऐसे सुहाने सफर पर चलने के लिये पूर्व योजना बनाने लगे।

मैंने उस दिन सभी को रात्रि भोजन के लिये आमंत्रित किया और रात्रि भोजन में स्पेशल दाल-बाटी का खाना हुआ, जिसने उस दिन को और भी यादगार दिन बना दिया। सच में बहुत ही सुखद और मस्ती भरा रहा रविवार का वह दिन। फिर से ऐसा रविवार जल्द ही आये इसी आशा के साथ मैंने चादर पैरों से खींचकर चेहरा ढंका और चला गया निद्रा देवी की गोद में। ○○



सैनिक

लेख

- सुष्मिता श्रीवास्तव
आशुलिपिक

संघर्ष तथा त्याग जीवन के कुछ ऐसे विलय हैं, जिनका महज संस्मरण जीवन-रस में कुछ क्षणों के लिए मिठास छोड़ जाते हैं। चाहें आप ये एक अभिभावक के रूप में कर रहे हो या एक बालक के रूप में। कुछ इन्हीं संस्मरणों पर आधारित यह कहानी के माध्यम से तत्कालीन विद्यालयों की स्थिति, जिनसे प्रायः अभिभावक शायद अनभिज्ञ होते हैं, पर प्रकाश डालने का छोटा सा प्रयास है।

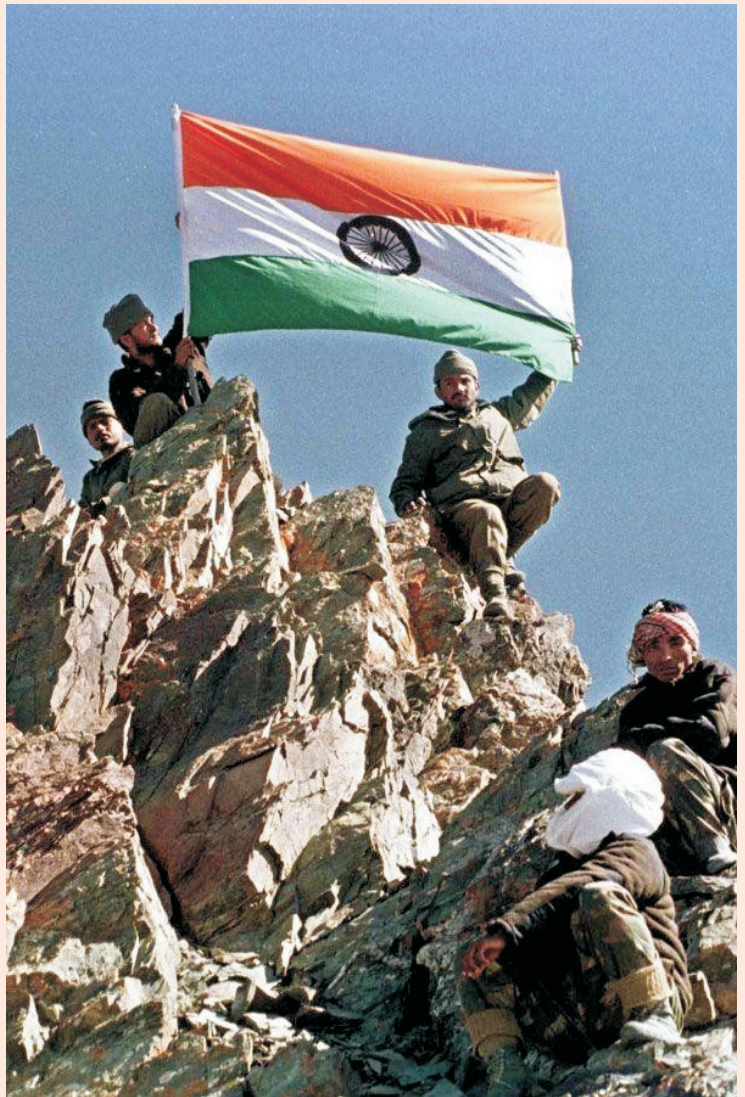
ये सैनिक हैं तो हम हैं!

रोज सो जाते हैं बेफिक्र होकर हम भी

सीमा पर सैनिकों को जगते देखा है मैंने।

अपने जीवन को कुर्बान कर देने वाले, पल-प्रति-पल मौत के साये में बैठे रहने वाले, अपने घर-परिवार से दूर नितांत निर्जन में कर्तव्य निर्वहन करने वाले जाँबाज सैनिकों के लिए बस चंद शब्द, चंद वाक्य, चंद फूल, दो-चार मालाएँ, दो-चार दीप और फिर उनकी शहादत को विस्मृत कर देना, उन सैनिकों को विस्मृत कर देना।

बस! इतना सा ही तो दायित्व निभाते हैं हम। ये अपने आप में कितना आश्चर्यचकित कर देना है साथ ही विचित्रता से भरा हुआ कि जिन सैनिकों के चलते हम स्वतंत्रता का आनंद उठा रहे हैं उन्हीं सैनिकों को हमारा समाज न तो जीते-जी उतना सम्मान देता है और न ही उनकी शहादत के बाद समूचे परिदृश्य को राजनैतिक चश्मे से देखने की आदत के चलते, वातावरण में तुष्टिकरण का रंग भरने की बुरी प्रवृत्ति के चलते, प्रत्येक कार्य के पीछे स्वार्थ होने की मानसिकता के कारण समाज में सैनिकों के प्रति भी सम्मान का भाव धीरे-धीरे अदृश्य होता जा रहा है। न केवल सरकारें वरन आम



नागरिक भी सैनिकों को देश पर जान न्यौछावर करने वाले के रूप में नहीं अपितु सेना में नौकरी करने वाले व्यक्ति के रूप में देखने लगे हैं। उनके कार्य को देश-प्रेम से नहीं बल्कि जीवन-यापन से जोड़ने लगे हैं। उनकी शहादत को शहादत नहीं बल्कि नौकरी करने का अंजाम बताने लगे हैं।

ऐसा इसलिए सच दिखता है क्योंकि अब



सैनिकों के काफिले शहर से खामोशी से गुजर जाते हैं। उनके निकलने पर न कोई बालक, न कोई युवा, न कोई बुजुर्ग जयहिन्द की मुद्रा में दिखता है, न ही भारत माता की जय का घोष सुनाई देता है। समाज की ऐसी बेरुखी के चलते ही सरकारें भी सैनिकों के प्रति अपने कर्तव्य-दायित्व से विमुख होती दिखने लगी हैं। यदि ऐसा न होता तो किसी शहीद सैनिक के नाम पर कोई नेता अपशब्द बोलने की हिम्मत न करताय किसी सैनिक की शहादत पर राजनीति न होतीय किसी सैन्य कार्यवाही को फर्जी न बताया जाता।

संभव है कि एक सैनिक के लिए अपनी जीविका के लिए सेना में जाना मजबूरी रहती हो किन्तु किसी सैनिक की शहादत के बाद भी उसकी संतानों के द्वारा उस पर गर्व करना, सैनिक बनकर देश की रक्षा करने का संकल्प लेना, उस अमर शहीद के परिजनों द्वारा तिरंगे पर बलिदान होते रहने की कसम उठाना तो मजबूरी नहीं हो सकती? बहरहाल, देर तो अभी भी नहीं हुई है। हम सभी को एकसाथ जागना होगा, निरंतर जागे रहना होगा। प्रतिदिन तो नहीं पर माह में किसी एक दिन सभी सैनिकों को पूरे सम्मान के साथ याद तो कर ही सकते हैं। उनके लिए कोई भव्य आयोजन नहीं कर सकते मगर अपने बच्चों को अपने सैनिकों की वीरता के बारे में तो बता ही सकते हैं। किसी राजनीति का समर्थन न करें किन्तु सैनिकों के अपमान में बोले

जाने वाले वचनों का विरोध तो कर ही सकते हैं।

समाज किसी भी दशा में जाए, राजनीति अपनी करवट किसी भी तरफ ले, तुष्टिकरण की नीति क्या हो, यह अलग बात है मगर सच यह है कि ये सैनिक हैं, इसलिए हम हैंय सच यह है कि सैनिकों की ऊँगली ट्रिगर पर होती है, तभी हम खुली हवा में साँस ले रहे हैंय सच यह है कि वह हजारों फीट ऊपर ठण्ड में अपनी हड्डियाँ गलाते हैं, तभी हम बुद्धिजीवी होने की अकड़ दिखाते हैं, सच यह है कि वह सैनिक अपनी जान को दाँव पर लगाये बैठा होता है, तभी हम पूरी तरह जीवन का आनन्द उठा पाते हैंय सच यह है कि एक सैनिक अपने परिवार से दूर तन्मयता से अपना कर्तव्य निभाता है, तभी हम अपने परिवार के साथ खुशियाँ बाँट पाते हैं।

देखा जाये तो अंतिम सच यही है, कठोर सच यही है, आँसू लाने वाला सच यही है, तिरंगे पर मर मिटने वाला सच यही है, परिवार में एक शहादत के बाद भी उनकी संतानों सैनिक बनाने वाला सच यही है। कम से कम हम नागरिक तो इस सच को विस्मृत न होने देंय कम से कम हम नागरिक तो सैनिकों के सम्मान को कम न होने दें, कम से कम हम नागरिक तो उनकी शहादत पर राजनीति न होने दें, कम से कम हम नागरिक तो उन सैनिकों को गुमनामी में न खोने दें। आइये संकल्पित हों, अपने देश के लिए, अपने तिरंगे के लिए और उससे भी आगे आकर अपने जाँबाज सैनिकों के लिए। ००



लेख

मेरा शहर-अयोध्या

- काजल वर्मा
डी.ई.ओ.

मेरा शहर सिर्फ इतना ही नहीं है जितनी जगह पर मैं रहती हूँ बल्कि वह मेरी पहचान का एक अनिवार्य हिस्सा भी है। प्रत्येक व्यक्ति की अपने शहर से अच्छी यादें जुड़ी होती हैं और वे हमेशा किसी व्यक्ति के जीवन का हिस्सा बनी रहती हैं।

आज मेरे शहर का नाम अयोध्या है जो कि उत्तर प्रदेश राज्य में है। इसके बहुत से पुराने नामों में से एक है "फैजाबाद"। फैजाबाद का नाम उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने 9 सितम्बर 2019 को बदल कर अयोध्या कर दिया। बहुत से लोगों को कभी कभी यह भ्रम हो जाता है कि अयोध्या और फैजाबाद एक ही शहर है। लेकिन अयोध्या फैजाबाद जिले में स्थित एक स्थान है। जिसको प्रभु श्री राम की जन्म स्थली होने का गौरव प्राप्त है। फैजाबाद अयोध्या का जुड़वा शहर था लेकिन अब फैजाबाद जिले का नाम अयोध्या है। अवध के पहले नबाव साआदात अली खान ने 1722 ई.वी. में फैजाबाद शहर को बसा कर अवध की पहली राजधानी बनाया था।

इतिहास

अयोध्या भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में स्थित एक अति प्राचीन धार्मिक नगर है। यह सरयू नदी के तट पर बसा है। इसे कौशल देश भी कहा जाता है। कई वर्षों तक यह नगर सूर्यवंशी राजाओं की राजधानी रहा है। वैदिक मतों के अनुसार भगवान श्री राम चन्द्र जी का जन्म इसी भूमि पर हुआ था। रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी। अयोध्या मूल रूप से मंदिरों का शहर है। यहां आज भी हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम एवं विशेष कर जैन धर्म से जुड़े अवशेष देखे जा सकते हैं। जैन धर्म के 24 तीर्थंकर में से पांच का जन्म फैजाबाद में ही हुआ है।



अयोध्या

मुख्य आकर्षण

जन्म भूमि

हिन्दूओं की मान्यता है कि श्री राम का जन्म अयोध्या में हुआ था। उनके जन्मस्थान पर एक भव्य मंदिर विराजमान था, जिसे मुगल आक्रमणकारी बाबर ने तोड़कर वहां एक मस्जिद दी थी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की अगुवाई में इस स्थान पर मंदिर बनाने के लिए काफी लम्बा आन्दोलन चला, जिसके चलते 6 दिसम्बर 1992 को मस्जिद का विवादित ढांचा तोड़ दिया गया और वहां पर एक अस्थाई मंदिर बना दिया गया। 9 नवम्बर 2019 को माननीय सुप्रीम कोर्ट ने ये आदेश दिया है कि विवादित जमीन पर राम मंदिर बनेगा तथा मस्जिद बनाने के लिए सुन्नी वफ़ बोर्ड को 5 एकड़ जमीन दी जायेगी।

हनुमान गढ़ी

भगवान राम का जन्म स्थान होने के नाते पूरे अयोध्या शहर में कई धार्मिक स्थान हैं। हनुमान गढ़ी उन सबमे अहम है। हनुमान जी को समर्पित इस मंदिर का निर्माण 10 वीं सदी में हुआ था। पहाड़ी पर स्थित इस

मंदिर तक जाने के लिए आप को 76 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं।

नागेश्वर

ऐसा माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण भगवान राम के बेटे कुश ने कराया था। यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है।

कनक भवन

कनक भवन को सोने का घर भी कहा जाता है। यहां पर श्री राम और माता सीता की सोने के मुकुट वाली मूर्तियां हैं। माना जाता है इनको माता कौशल्या ने सीता को विवाह उपरान्त मुंह की दिखाई स्वरूप दी था।

गुलाब बाड़ी

शुजाउद्दौला के मकबरे के चारों तरफ फैले इस गुलाब के बगीचे में तरह-तरह के गुलाब के फूल देखने को मिलेंगे। इस स्थान को यहां मौजूद इमामबाड़ा और मस्जिद के लिए जाना जाता है।

दशरथ महल

शहर के मध्य में स्थित दशरथ भवन वह जगह है जहां भगवान श्री राम के पिता राजा दशरथ जी का निवास था। यह एक भव्य महल है जिसको अच्छी तरह से सजाया गया है।

मणि पर्वत

मान्यता है कि जब युद्ध में भगवान श्री राम के छोटे भाई लक्ष्मण जी बुरी तरह घायल हो गये थे तो "संजीवनी बूटी" की जरूरत थी, इस समय हनुमान जी द्रोणागिरि का पूरा पहाड़ ले आये थे, जिसका एक छोटा भाग अयोध्या में गिर गया था जिसे मणि पर्वत के नाम से जाना जाता है। यहां पर सम्राट अशोक द्वारा निर्मित स्तूप एवं बौद्ध मठ को भी देखा जा सकता है।

सीता रसोई

वास्तव में यह रसोई घर नहीं है। यहां एक मंदिर है जिसके एक कोने में प्राचीन रसोई घर का एक मॉडल है ऐसा माना जाता है कि माता की रसोई यहीं थी मंदिर परिसर में ही। एक किनारे पर चारों भाई और उनकी पत्नियों की मूर्तियां स्थापित हैं।

गुप्तार घाट

यह वह जगह है। जहां भगवान राम ने जल



समाधि ली थी ये सरयू नदी पर स्थित है गुप्तार घाट के पास ही मिलिट्री मंदिर कम्पनी गार्डन राजकीय उद्यान और अन्य प्राचीन मंदिर पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है। बक्सर के विजय के बाद नवाब शुजा-उद-दौला द्वारा निर्मित ऐतिहासिक किला गुप्तार घाट से कुछ ही दूरी पर स्थित है।

आयोध्या दीपोत्सव

दीपोत्सव की शुरुआत उत्तर प्रदेश के तात्कालीन मुख्य मंत्री योगी अदित्यनाथ ने की, जिसमें हर साल दीपावली के अवसर पर विभिन्न घाटों पर लाखों दिये जलाये जाते हैं और पूरी आयोध्या दीयों से जगमगा उठती है। साल 2019 का दीपोत्सव में एक कीर्तिमान रच गया है। 2019 में राम की पौड़ी से लेकर अन्य घाटों पर 5 लाख 51 हजार दिये जलाकर आयोध्या में एक 'विश्व रिकार्ड' बनाया गया है।

उत्तर प्रदेश की सरकार ने अयोध्या में भगवान राम की विशालकाय प्रतीमा स्थापित करने के लिए 447 करोड़ रुपये आवंटित किये। यह प्रतिमा दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा होगी। इसकी ऊंचाई 251 मीटर होगी जबकि सरदार पटेल की प्रतिमा 183 मीटर ही है।

इस प्रकार मेरा प्यारा शहर देश के सबसे अधिक रोमांचिक धार्मिक एवं ऐतिहासिक शहरों में से एक है। मुझे अपने शहर पर गर्व है। ○○



अपेक्षार्ये- एक हकीकत

- प्रवीण कुमार कम्ठान
से.नि. सहायक लेखा अधिकारी

अपेक्षा शब्द का पर्याय “उम्मीद” है। अपेक्षा या उम्मीद शब्द से व्यक्ति का नाम जन्म से ही जुड़ जाता है। जन्म के समय अबोध नवजात बालक इस शब्द को नहीं जानता बल्कि उसकी माँ से यह उम्मीद रखी जाती है कि उसे वह अपना दूध पिलाकर उसकी उदरपूर्ति करे तथा अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करे क्योंकि उस समय वह भूखा होने पर भी दूध माँगना नहीं जानता। वह तो सिर्फ रो कर ही अपनी उपस्थिति और आवश्यकता को व्यक्त कर सकता है। जन्म के समय बच्चे को सिर्फ रोना, दूध-पीना, सोना, सांस लेना और मलमूत्र विसर्जित करना बस वह इतनी ही क्रियाओं को कर पाता है। बड़े होने के साथ-साथ वो अपनी आवश्यकताओं को पहचानता है और उनकी पूर्ति हेतु दूसरों से अपेक्षा रखना या मांग करना सीख जाता है और तब से ही अपेक्षाओं का सिलसिला शुरू हो जाता है, जो उम्र के साथ-साथ बढ़ता ही जाता है बच्चों की मांगें दोनों ही प्रकार की होती है- उचित (जायज) तथा अनुचित। उचित माँगों को पूरा करना परिवार के मुखिया का दायित्व होता है जिसे वह अपने सामर्थ्य के अनुसार पूरा भी करता है जैसे - रहने, खाने, पहनने, शिक्षा एवं मनोरंजन से संबंधित मांगे या प्राथमिक आवश्यकताएं। परन्तु कई बार बच्चों की मांगें अनुचित भी होती हैं, जिन्हें हम जिद्द का नाम भी दे सकते हैं। इनकी पूर्ति करने पर हम उन्हें जिद्दी बना देते हैं। कभी-कभी यदि संभव हो तो बच्चों की जिद्द पूरी करने में कोई हर्ज नहीं है क्योंकि बच्चों में सर्वप्रथम इदम् (Id) का विकास होता है अर्थात् बच्चा सुखवाद के अधीन होता है, उसे जिन कार्यों को करने में आनंद आता है वह उन्हें ही करना चाहता है। परन्तु हर समय उनकी अनुचित मांगों को

तथा अनुचित स्थान पर की गई मांगों को यदि पूरा कर दिया जाये, सिर्फ इस भय से कि बच्चा रोयेगा, चिल्लायेगा, हाथ-पैर पटकेगा, मार-पीट करेगा तो आगे चलकर ये बच्चे बहुत अधिक जिद्दी हो जाते हैं और माता-पिता के लिये सिरदर्द बन जाते हैं। कई बार विपरीत परिस्थिति हो सकती है, कभी सामाजिक स्थान, जहाँ बात पूरी ना की जा सके, कभी पैसे का अभाव जो उनकी मांग तुरन्त पूरी न करने दे। अर्थात् माता-पिता को यह स्वयं ही तय करना होगा कि उनकी किन मांगों को और कब पूरी करना है और कब नहीं। अनुचित मांग पूरी न होने पर या तो बच्चा अधिक जिद्द करेगा अथवा विद्रोही बन जायेगा क्योंकि मांग पूरी न होने पर उसे क्रोध आयेगा वह आक्रोशित होकर आक्रामक हो जायेगा। जो उसे विद्रोही प्रवृत्ति का बना देगा और बच्चे का व्यक्तित्व प्रभावकारी बनने की बजाय उसे विकृत व्यक्तित्व वाला बना देगा जिसके जिम्मेदार कहीं न कहीं उसके माता-पिता भी होंगे।

अतएव, माता-पिता का ये दायित्व भी है कि वे अपने बच्चों के व्यक्तित्व विकास की समुचित व्यवस्था करें जिसकी शुरुआत घर से ही होती है क्योंकि ‘घर’ ही बच्चे की प्रथम पाठशाला और माँ उसकी प्रथम गुरु मानी जाती है। छोटे-बच्चों को नकलची बंदर की संज्ञा दी जाती है क्योंकि वो व्यवहार या क्रिया करना अपने बड़ों यानि माता-पिता, बड़े भाई-बहन, दादी-दादाजी, से ही सीखता है, वह उन्हें जैसे व्यवहार करते देखता है, हू-ब-हू उसकी नकल करके वैसा ही करना सीख जाता है क्योंकि बच्चा सर्वप्रथम अनुकरण पद्धति के माध्यम से ही सीखता है। घर में माता-पिता, भाई-बहन, दादी-दादा उसके “रोल मॉडल” होते हैं। रोल मॉडल

होने के कारण उन्हें यह ध्यान रखना होगा कि हमारा व्यवहार और व्यवहार करने का तरीका ऐसा हो जो बच्चे में अच्छी आदतों के निर्माण में सहायक हो, बच्चा कुम्हार की कच्ची मिट्टी के समान होता है, जिसे वह किसी भी आकार में ढाल लेता है ठीक उसी प्रकार माता-पिता भी अपने बच्चों को संस्कारों का आकार देकर उन्हें अच्छा बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त बच्चे को साफ स्लेट की भाँति भी माना जाता है, जिस पर जो चाहें लिख सकते हैं उसी प्रकार वे अपने बच्चे को जो सिखाना चाहें सिखा सकते हैं। अर्थात् परिवार के सदस्यों का व्यवहार उनके सामने ऐसा हो जो उन्हें गुणवान, अच्छी आदतों का स्वामी बना सके। उदाहरण स्वरूप एक ओर तो हम बच्चों को सत्य बोलने की सीख देते हैं। दूसरी ओर उन्हीं को झूठ बोलने के लिये कहते हैं जैसे —पापा को उनके दोस्त 'गुप्ता जी' से नहीं मिलना है। कॉलबैल की आवाज सुनाई दी, तो पापा ने बेटे से यह कहकर दरवाजा खोलने के लिए कहा कि यदि गुप्ता अंकल हों तो कह देना कि पापा घर में नहीं हैं। इस प्रकार हम खुद बच्चे से झूठ बुलवाते हैं और बच्चा समझ जाता है कि कभी-कभी झूठ बोला जा सकता है। इस प्रकार ये दो तरह का व्यवहार उन्हें परिस्थिति के अनुरूप व्यवहार में परिवर्तन करना सिखा देता है। ये ही बच्चे उन्हें 'रोल मॉडल' मानकर कॉपी करते-करते बड़े होकर उनमें कमियाँ निकालने लगते हैं। उनके त्याग और परिश्रम को कर्तव्य का नाम देकर अपनी जिम्मेदारियों से पल्ला झाड़ना सीख जाते हैं। बड़े होते-होते बाहरी दुनियाँ और हमउम्र साथियों की सोच से प्रभावित होकर आधुनिकता की हवा के साथ बहते हुए वे अपने घर के संस्कारों को भूल जाते हैं। अपने माता-पिता के समान बनने की अपेक्षा उनकी जिम्मेदारी को उठाना बोझ मानने लगते हैं। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण बढ़ती संख्या में वृद्धाश्रमों का खुलना है। जनरेशन गैप के कारण विचारों में समानता न होना तो स्वाभाविक है परन्तु अपने से बड़ी उम्र वालों की सोच को

निम्न समझना, उन्हें तुच्छ, पिछड़ा हुआ मानना और स्वयं को उनसे श्रेष्ठ मानना कभी भी उचित नहीं है। आधुनिकता की दौड़ एक ओर जहाँ माता-पिता को वृद्धाश्रम पहुँचा रही है, वहीं दूसरी ओर कुछ प्रतिशत लोग उन्हें घर के नौकरों की तरह दर्जा दे रहे हैं। जिसके लिए कुछ मात्रा में दूरदर्शन, सिनेमा और सोशल मीडिया भी जिम्मेदार है। बूढ़ी माँ से अपेक्षा की जाती है कि वे इस उम्र में भी उनके घर की रसोई संभालें और बच्चों की देखभाल व जरूरतों का ध्यान रखें क्योंकि ये काम तो वे हमेशा से करती आ रही हैं। उनसे कोई नयी बात नहीं करवा रहे हैं। उसी प्रकार बूढ़े पिता से राशन, सब्जी, दूध आदि लाने के साथ-साथ बच्चों को स्कूल छोड़ने या बस-स्टॉप तक छोड़ने, वापस घर लाने की जिम्मेदारी सौंपने में किसी भी प्रकार का संकोच नहीं किया जाता क्योंकि ऐसा समझा जाता है कि वे घर में फ्री हैं, खाली बैठे हैं तो ये छोटे-मोटे कामों को करने में क्या बुराई है। कहीं-कहीं यहाँ तक देखने को मिलता है कि किसी पार्टी या बड़ी पार्टी आदि में अपने दोस्तों के सामने माता-पिता या सास-ससुर को घर के नौकरों के समान खान-पान की व्यवस्था करने तक की भूमिका निभाने के लिये मजबूर कर दिया जाता है।

कहने का तात्पर्य है कि अपेक्षा शब्द इतना विस्तृत है जो मूल आवश्यकता से प्रारंभ होता है और मानवीय संवेदनाओं के हनन पर आकर समाप्त होता है इस लेख का उद्देश्य हर व्यक्ति को एक ही नजरिये से देखना नहीं है बल्कि इस कुरीति से अवगत कराना है। जब हमारे हाथ की पाँच अंगुलियाँ ही एक जैसी नहीं होती हैं तो व्यक्ति एक समान कैसे हो सकते हैं। हर व्यक्ति अपने आप में 'यूनिक' होता है। उसमें व्यक्तिगत भिन्नताएं पाई जाती हैं, जो सदैव एक को दूसरे से भिन्न बताती है। कुछ बहुत ही संस्कारी होते हैं, तो कुछ संस्कारहीन। कुछ राम-सीता की भाँति कर्तव्यनिष्ठ तो कुछ रावण के समान अहंकारी होते हैं। कुछ श्रवणकुमार की तरह मातृ भक्त और सेवा सुश्रुषा का ज्वलंत

उदाहरण बनते हैं तो कुछ राजा हिरण्यकश्यप के समान अपनी ही संतान के दुश्मन बन बैठते हैं। कुछ परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को बदल लेते हैं तो कुछ अपने संस्कारों को जीवनपर्यन्त निभाते हैं। कुछ अहंवादी, स्वार्थी होते हैं तो कुछ विशाल हृदय वाले मदर टेरेसा की तरह निस्वार्थ सेवाभाव से ओत-प्रोत होते हैं।

बच्चों के समान बूढ़े माता-पिता भी अपनी संतान से कुछ अपेक्षाएं रखते हैं। उन्होंने सारा जीवन उनकी अच्छी परवरिश शिक्षा-दीक्षा, उनका करियर बनाने और अपने माता-पिता, भाई-बन्धुओं की जिम्मेदारियों को निभाते हुए गुजारा होता है। बदले में वे भी अपने बच्चों से उन्हीं जैसा भाव पाने की अपेक्षा रखते हैं। जैसे उन्होंने अपने माता-पिता की सेवा की, वैसी ही वे अपने बच्चों से अपनी देखभाल की उम्मीद रखते हैं। जैसा उन्होंने उनकी जरूरतों को पूर्ण करना अपनी प्राथमिकता समझी, वैसे ही अब वे उनकी जरूरतों को पूर्ण करना अपनी प्राथमिकता समझ, वैसे ही अब वे उनकी जरूरतों को पूर्ण करें। उस समय कार्यों की अधिकता के कारण उन्हें समय ही नहीं मिलता था, वे सभी जिम्मेदारियाँ पूरी हो जाने पर अब उनके पास समय ही समय रहता है। अब इस खाली समय में उन्हें अपनों के साथ व उनकी परवाह की बेहद आवश्यकता होती है। इस समय उनकी संतान अधिक व्यस्त हो चुकी होती है क्योंकि अब वे उनकी उस भूमिका को निभा रहे होते हैं। परन्तु इस व्यस्ततम समय में उन्हें अपने बूढ़े माता-पिता के लिए थोड़ा समय निकालने और उनकी जरूरतों को पूछ कर स्वयं कुछ हद तक पूरा करना अत्यावश्यक है। बूढ़े माता-पिता अपने बच्चों की थोड़ी सी परवाह से ही खुश हो जाते हैं। इस समय नाती, पोते-पोती भी उनका ख्याल रखकर, उनके साथ समय बिताकर अहं भूमिका निभा सकते हैं। बूढ़े माता-पिता के पास अनुभवों का असीम भंडार

होता है, जो दादी-नानी की कहानियों के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित हो जाता है। कहानियों के जरिये अनेक समस्याओं के समाधान का तरीका बड़ी सरलता से उसके जहन में पहुँच जाता है। व्यक्ति जब भी किसी समस्या में घिरे और सही निर्णय लेने में स्वयं को असमर्थ पाये तो यकीन मानिये अगर वे अपने बूढ़े माता-पिता की ओर मुख करेंगे तो सदा ही यही निर्णय लेने में अपने आपको तैयार कर पायेंगे।

हम सभी ने कभी न कभी बुजुर्गों के मुँह से सुना होगा— “हमारे ये बाल यूँ ही धूप में सफेद नहीं हुए हैं।”

इस एक वाक्य में उनके जीवन भर के अनुभवों का खजाना छुपा हुआ है।

अंत में एक और संदेश देना चाहेंगे—

“जिस घर में बुजुर्ग खुश रहते हैं।

वही घर हकीकत में खुशहाल होता है।” ○○





सबसे बड़ी गुरु 'माँ'

— रचना सक्सेना
अतिथि रचनाकार

जिनसे हम ज्ञान लेते हैं वो गुरु कहलाते हैं परन्तु हमारे पूरे जीवन में न जाने कितने लोग हमें ज्ञान देते हैं और हम कुछ न कुछ पल-प्रतिपल

सीखते रहते हैं। माता बच्चे की प्रथम गुरु मानी जाती है। गुरु की यदि बात करें तो वह है, जो हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाता है। जो हमें रोशनी प्रदान करता है। अच्छे और बुरे में भेद बताता है। हमें जीवन जीना सिखाता है। ऐसा सबसे पहले ऐसा कौन करता है? सबसे पहले यह रोशनी हमें ममतामयी माता दिखाती है। यदि हमें हमारी माता द्वारा कुछ भी सिखाया न जाता तो हमारी क्या स्थिति

होती? क्या हम ढंग से चल पाते, बात कर पाते, लिख पाते, यहाँ तक कि हम अपने जीवन और इस शरीर की रक्षा कैसे करना है? यह भी नहीं जान पाते। मान-अपमान, प्यार और अहंकार जैसी मूल वृत्तियों को पहचानना भी माता ही सिखाती है। परन्तु हम उन्हें उचित सम्मान दे नहीं पाते हैं। बूढ़े माता-पिता यदि किसी कारणवश अस्वस्थ हो जाएं तो वे हमें बोझ लगाने लगते हैं। तब हमें यह बात याद भी नहीं रहती कि बचपन में हमारे बीमार होने पर कैसे वे रात को जाग कर माथे पर पट्टी करते थे।



माता ही वह शक्ति है जो दुनिया से लड़कर अपनी संतान की रक्षा करती है। खुद गीले में, भूखे पेट सोकर अपनी संतान को सूखे में भरपेट खिलाकर ही चैन लेती है। माता बनना बड़ा ही सौभाग्य का विषय होता है। ईश्वर प्रत्येक जगह नहीं हो सकता। इसीलिए प्रत्येक परिवार में उसने माता को बनाया। उसकी सूरत में ही ईश्वर के दर्शन किये जाते हैं। यदि माता नाराज, कुपित तो समझो ईश्वर भी नाराज या कुपित हो जाता है। पूरी सृष्टि जिस प्रकार ईश्वर के

द्वारा चलती है वह जगत का भला करने वाला होता है। इसी प्रकार माता पूरे घर परिवार को साथ लेकर चलती है, उसका उद्देश्य मात्र अपने परिवार की खुशहाली एवं समृद्धि से होता है। ऐसी ममतामयी, करुणामयी माता का हमें सम्मान करना चाहिए। उनका कहा मानकर चलने से जीवन में कोई बाधा, कठिनाई हमें छू नहीं सकती है। इसीलिए माता के स्नेह का मोल नहीं है। वह अनमोल है।

आजकल बच्चे जब बड़े हो जाते हैं तो अपनी

गुरु यानि माता का सम्मान नहीं करते। अपनी आजादी के मद में चूर होकर वह माता का अपमान करते हैं। माता की समझाईश उन्हें रोकने-टोकने वाली लगती है। जबकि माता अपनी संतान को हर बुराई, हर कष्ट के प्रति सचेत करती है। लेकिन दुर्भाग्य है कि आजकल की नई पीढ़ी यह समझ नहीं पाती है। फिर जब वह भविष्य में स्वयं अपनी माता की जगह होती है तो उस पीढ़ी को समझ आता है कि माता बनना कितना मुश्किल है। सब कुछ त्याग कर भी हमेशा चुप रहने वाली, चुपचाप सब कुछ सहने वाली माता ही हो सकती है। इसीलिए अपनी माता का सम्मान करना चाहिए। जब वह इस दुनिया में नहीं होती तो इसके दर्द का बयां उसकी संतान ही कर सकती है। बिन माता के बच्चों को दुनिया वीरान नजर आती है तब उन्हें कद्र होती है अपनी माता की। इसीलिए बिना समय गंवायें अपनी गुरु रूपी माता से गुरु के गुण, उनका आशीर्वाद प्राप्त करना चाहिए। उसका कहना मानकर उसका सम्मान बनाये रखना चाहिए। आखिर वह हमारे भले के लिए ही तो सबकुछ करती है।

माता जैसी सच्ची गुरु अपनी संतान को निःस्वार्थ रूप से प्रेम करती है, उसे जीवन की रोशनी दिखाने के लिए उसी तरह रात-दिन सिरहाने बैठी रह सकती है। एक कहानी है जो हम सब ने सुन रखी होगी— श्रवण कुमार की। वे अपने बूढ़े माता-पिता (जो अंधे थे, चलने में सक्षम नहीं थे) को उठा कर तीर्थ यात्रा पर ले गए थे, उनकी इच्छानुसार। मार्ग में एक जगह जब माता-पिता ने जल पीने की इच्छा

व्यक्त की तो वह जल भरने के लिए गए, जहाँ पर दशरथ महाराज के तीर से उसकी मृत्यु हो गई। श्रवण कुमार के पिता के श्राप की वजह से दशरथ को भी पुत्र का वियोग सहना पड़ा और उसी के विरह में तड़पते हुए वे भगवत धाम को गए। भगवान प्रसन्न होते हैं आपसे, अगर आप अपने माता-पिता की बात मानें, उनकी सेवा करें। भगवान को सबका पिता कहा गया है। लेकिन अगर आप अपने माता-पिता को प्रसन्न नहीं कर पाएंगे तो आध्यात्मिक पिता अर्थात् भगवान को कैसे प्रसन्न कर पाएंगे? यदि आप माता-पिता को आप प्रसन्न नहीं कर पाते तो कोई गुरु-सद्गुरु आपको सन्मार्ग पर नहीं ले जा सकता। अगर वे प्रसन्न नहीं हैं तो भगवान भी प्रसन्न नहीं होंगे। धर्मराज युधिष्ठिर ने महाभारत के युद्ध से पहले विपक्ष में खड़े अपने सभी सम्माननीय जनों को प्रणाम कर उनसे आशीर्वाद लिया था। भगवान राम ने भी वनवास पर जाने से पहले माता कैकयी, माता सुमित्रा, माता कौशल्या से आशीर्वाद लिया था। लेकिन माता-पिता का आशीर्वाद तभी फलता है, जब उसे पूर्ण श्रद्धा से लिया जाए। इसी लिए माता में प्रथम गुरु यानि ईश्वर के साक्षात् दर्शन कर उन्हें हमेशा सम्मानित, प्रसन्नचित्त रखने का दायित्व होना चाहिए। क्योंकि इतिहास गवाह है कि माता की खुशी से ही परिवारजनों एवं परिवार की खुशी जुड़ी होती है। इसीलिए अपनी माता को गुरु का दर्जा देकर उसे हमेशा प्रसन्न रखने की चेष्टा करनी चाहिए ताकि उसके आशीर्वाद से उसकी संतान के जीवन में उमंग एवं उत्साह का संचार हो सके। ००



बस
एक
माँ
है जो
कभी
खफा
नहीं होती



जन्मदिवस

- जयप्रकाश

डी.ई.ओ.

इस पीढ़ी में ही फैली थी ये ललक कि अब छोटे शहर व गांव के मध्यम वर्गीय परिवार भी अपने संतान को यथासंभव बेहतर शिक्षा प्रदान करने को आतुर थे। यद्यपि शिक्षा की देवी की अर्चना पहले भी सभी वर्ग करते थे, परंतु उनका ग्रहण उन क्षेत्रों के कुछ विशेष समुदाय ही कर रहे थे। हालांकि शहरों में शिक्षा के प्रति जागरूकता पहले से ही थी किंतु उक्त क्षेत्र के मध्यम वर्ग प्रथमतः तो शिक्षा के उद्देश्य व परिणाम से कमोबेश अनभिज्ञ थे और साथ ही निश्चिततः उन्हें इस अंधकार में ही जीते रहने की साजिश कुछ वर्ग-विशेष द्वारा की गई होगी। अन्यथा इस प्रकाश का वेग इतना कम भी न था कि इन वर्गों तक आजादी के इतने वर्ष बाद पहुंचे जिससे इनके जीवन के अन्य आयामों पर भी इनका ध्यान प्रकाशित हो।

उन्हीं वर्गों में एक, वणिक वर्ग में पोषित बालक भी इस शिक्षा पथ का पथिक बन चुका था। उपर्युक्त उनके पंक्तियां पूर्व में ही अभिभावक की स्थिति को बयां कर चुकी है, परंतु इस शिक्षा-पथ पर उसे अग्रजों द्वारा गाइड किया जा रहा था। जाहिर है, सरस्वती के चरण रहे थे तब विभिन्न क्षेत्रों में फैल रही थी, पर उससे भी तीव्र कुछ फैले तो वे थे उनके मंदिर अर्थात् विद्यालय। कुछ बड़े मंदिर बने तो कुछ छोटे तथा कहीं-कहीं तो पुजारी की अर्चना विधि भी भव्य व विशेष प्रतीत हो रही थी। अनुज होने का एक लाभ यह हुआ कि भैया द्वारा पिताजी के समक्ष उसका नामांकन शहर के ही प्रसिद्ध स्कूल में कराने की पैरवी हुई।

अब तक अपने गाईड के पद-चिह्नों अर्थात् नोट्स तथा छत्रछाया में चलने वाले बालक को अब एक नया पथ मिलना था। निश्चिततः पूर्ववत भांति तैयार पथ के बदले अब नए स्कूल में उसे नए वातावरण व परिस्थितियों को संभालना था।

प्रथम दिन वर्ग में उसके पूर्व परिचित मित्र होने का फायदा मिला तथा सहृदय कक्षा की अंतिम पंक्ति में बैठने का निमंत्रण मिला, जिसे ठुकराने की निष्ठुरता वह नहीं कर सकता था। किंतु एक और आमंत्रण अभी शेष था और वर्ग-शिक्षक ने सप्रेम प्रथम पंक्ति में बैठने का

अवसर दिया। अगर उस वर्ग का वर्णन किया जाए तो वह भी किसी सामान्य वर्ग की तरह विविध गुणों वाले बालकों से परिपूर्ण था, जिसका वर्णन आगे है। भले ही अब यह बात समझ आयी है कि विद्यालय का उद्देश्य सिर्फ शिक्षा नहीं वरन् एक सकारात्मक और आरामदायक वातावरण निर्मित करना होता है, जिसमें छात्र अपने अन्य कला-कौशल को निखारें किंतु उस वर्ग के छात्र इन विचारधारा से कुछ दो कदम आगे ही थे। उदाहरणस्वरूप, एक सामान्य समाज के भांति ही वर्ग में भी मिले उदारवादी वातावरण में कुछ बच्चे स्वतः एकता का महत्व समझ शरारती बच्चों का गैंग तक बना चुके थे। तो वहीं, कुछ प्रतिस्पर्धात्मक पढ़ाकू बच्चे अल्पसंख्यक व असंगठित होने के कारण 'सर से बोल दूंगा' नामक अस्त्र में उनसे जूझ रहे थे। वहीं कुछ टी. वी. के किस्से बतियाने वाले ग्रुप थे, वहीं कुछ ऐसे भी थे जो कक्षा से पूर्व बोर्ड साफ करना, वर्ग व्यवस्थित करना अर्थात् साथ में डंडा भी उपलब्ध रखने को ही अपना धर्म समझते थे।

वक्त बीता तथा जो वहां समझना था वह यह कि हम यजमान यदि उन मंदिरों में कोई व्यक्तिगत पुजारी की शरण नहीं लेते तब तक हमारी अर्चना अर्थात् अध्ययन पूर्णविधिरूपेण होना कठिन था। वास्तव में, उन निजी स्कूलों में शिक्षक के वेतन काफी कम होता था, तथा वे सिर्फ इसलिए वहां टिके होते थे क्योंकि उन निजी स्कूलों में संपन्न परिवार के बच्चे उनको ट्यूशन लेने के मिल जाया करते थे। पर किसी तरह मेरा वक्त वहां एक अच्छे छात्र के रूप में बीतता रहा।

अब बात मेरे उस स्कूल में बीते अंतिम वर्ष की है। दरअसल, बोर्ड परीक्षा तक पहुंचते-पहुंचते कुछ वर्तमान विद्यार्थियों में अध्ययन के साथ-साथ कुछ अद्यतन रखने के विचार खिलते हैं तो वे हैं आधुनिक माहौल व सिने-जगत् से कुछ हद तक प्रेरित व्यक्तित्व और साथ ही कोशिश होती है उनके जीवन शैली के नकल की। परंतु एक सादगी भरे घरेलू माहौल से संबंधित होने के कारण उन तथाकथित आधुनिकताओं से खुद को मैंने दूर ही रखा। ऐसा न था कि मुझे वो भाती न थी, परंतु उनमें खुद को ढालना मेरे लिए 'अंगूर खट्टे हैं' के पर्याय थे।

और कुछ इन्हीं वजहों से शायद मेरे द्वारा अपने जन्म-दिवस को भी छुपाने की एक असफल कोशिश हुई जिसका भेद कक्षा के अंतिम क्षणों में खुल गया। हमारा अंतिम वर्ष होने के कारण पार्टी का दस्तूर तो था किंतु उस दिन अब वक्त न था। सो अब पार्टी के लिए अगले महीने का वक्त रखा गया। पार्टी ट्यूशन में होनी थी जिसके शिक्षक न सिर्फ विद्यालय वरन् उस क्षेत्र में भी आधुनिकता के प्रतीक थे। ब्रांडेड वस्त्र, प्रतिदिन क्लीनशेव, महंगी परफ्यूम, महंगे गैजेट्स के साथ-साथ नित नए बाईक बदलना उस वक्त आम न था। और इसलिए मेरे लिए आसान न था, उस वक्त उस स्तर की पार्टी देना और वो इसलिए भी कि आज तक इस तरह की बर्थडे पार्टी के लिए अभिभावकों से भाइयों द्वारा कुछ न मांगा गया था। अतः जो भी राशि हो, मुझे खुद के बल-बुद्धि से एकत्रित करना था।

वाकई कष्टसाध्य था वह एक माह अभिभावक के समक्ष पूर्ण आज्ञाकारी बालक की तरह समय व्यतीत करना। पर ऐसा न था कि उन बड़ी हुई पॉकेट मनी से उतना राशि एकत्रित हो पाती, सो घर की सब्जी व कुछ छोटे राशन लाने की भी जिम्मेदारी मैंने उठाई। और तो और पूर्व में यदा-कदा ही दूकान पर जाने वाले चरण अब रोज वहां जाते। एक जिम्मेदार पुत्र की भांति मैं पिताजी की सहायता का प्रयास करता किंतु कुछ देर बाद लौटते वक्त स्वयं द्वारा निर्धारित उचित मेहनताना प्राप्त कर लेता। परंतु उस पार्टी हेतु निर्धारित राशि के लिए इस संग्रहण के साथ-साथ जो विचारणीय था, वह निर्गमन श्रोत पर अंकुश लगाना। अतः एक चटोर बालक होते हुए भी मैंने पूरे माह जिह्वा-लिप्सा पर संयम बनाए रखा। कहने को तो यह एक सामान्य बालक का महीने भर का संघर्ष था परंतु एक सामान्य मनुष्य का पूरा जीवन भी प्रायः इसी भांति बीत जाता है, जब वह कठोर परिश्रम से धन अर्जित करता है, खुद की इच्छाओं पर अंकुश रखता है तथा वह धन तथाकथित सम्मान हेतु दूसरों पर किसी समारोह के बहाने व्यय किए जाते हैं।

खैर, पार्टी के दिन कुछ साथियों के साथ मिष्ठान्न आदि क्रय किए गए। स्वभावतः कुछ उत्साह तो था ही, मन भी हर्षित था। वक्त आया, प्लेटे सजीं। सर के लिए विशिष्ट प्लेट लगायी गई थी। पार्टी आरंभ करने का आदेश दे सर कुछ वक्त के लिए कार्यवश बाहर निकले। परन्तु उसके बाद जो कुछ हुआ, वह मेरे लिए पूर्णतः अप्रत्याशित था। दरअसल, सारी मिठाइयां बासी थी। किसी ने जरा सा चखा तो किसी ने चखा तक भी नहीं, वहीं कुछ परम मित्र उन्हें निगलने की असफल

कोशिश कर रहे थे। सारा उल्लास व उमंग क्षण भर में विलीन हो चुका था। अब मैं बस अपनी बेचारगी व कुंठा को एक भावहीन मुस्कान से अवतरित करने की असफल कोशिश कर रहा था और साथ ही एक और अप्रिय क्षण को शंकित था और वह वक्त था सर द्वारा मिष्ठान्न ग्रहण करने का वक्त। शिक्षक के प्रतिक्रिया हेतु कुछ अन्य साथी भी इतने कौतुहल में थे कि सर के आने से पूर्व ही उनमें से एक ने चुपके मेरे उसमें से कुछ अंश चख डाले। यद्यपि उसने कुछ न कहा परंतु उसके भाव सब व्यक्त कर रहे थे। अब आशावित रहने को मेरे पास कुछ न था। बस इंतजार था मेरे द्वारा आयोजित इस पार्टी के जल्द से जल्द समापन की। और उन क्षणों में मेरे अंदर चल रही भावनाओं को यहां व्यक्त करना कठिन है।

कुछ वक्त में सर आए और वहां का दृश्य बहुत कुछ वर्णन कर रहा था, किंतु उन्होंने खुद प्लेट उठायी। यद्यपि सभी जानते थे कि उनकी प्लेट भी अग्राह्य है, फिर भी किसी ने कुछ न कहा। प्रथम निवाला के साथ ही उनकी भाव भंगिमा तनिक परिवर्तित हुई किंतु संभवतः वे पूर्व में ही इस परिणाम से परिचित थे। फिर भी बिना कोई शिकायत उन्होंने वो सारी चीजें ग्रहण की जिसे शायद मैं भी ग्रहण न कर पाता।

निस्संदेह पूर्व के क्षणों में मैं पूर्णतः उत्साहहीन, भावविहीन यहां तक विचारहीन भी था जो बस शांतचित्त हो अंतर्मन में स्वयं की नियति को कोसे जा रहा था परंतु इस अनुपम बर्थडे गिफ्ट ने चंद क्षणों में ही मेरी मनोदशा बदल चुकी थी। अब उत्साह उनका मेरे साथ होने का था। इस कदम ने अब न सिर्फ उनके प्रति मेरी श्रद्धा व कृतज्ञता के भाव जगाए थे वरन् उनकी नजर में मेरी महत्ता का भी एहसास दिलाया था कि आखिर क्यों उनके ये कदम मेरे लिए बढ़े होंगे। और इस तरह वे मुझे अनवरत परिश्रम करने की प्रेरणा दे गए। उनका यह कदम वाकई एक छात्र के लिए एक ऐसा अनमोल तोहफा था, जिसने न सिर्फ एक किशोर छात्र के सोचने का नजरिया बदला वरन् कुछ हद तक जिंदगी बदल भी चुकी है और साथ ही दे गए एक अनमोल याद जिसका संस्मरण हर बार मुझे पुलकित कर जाता है।

खैर, पार्टी समापन के अगले क्षण ही हम कुछ क्रोधित मित्रगणों ने उस दुकान पर धावा बोला, परिणामस्वरूप वो सारे पैसे जो शायद मेरी किस्मत में खर्च होना न लिखा था, दुकानदार द्वारा वापस मेरे हाथों में दे दिए गए, जिसके बचत की खुशी दिखाना, एक कष्ट बन गया होने के नाते मेरे लिए स्वभाविक ही था। ०



खान पान का स्वास्थ्य एवं विचारों पर गहरा प्रभाव

– लालमणि शर्मा
अतिथि रचनाकार

मानव के अच्छे विचार एवं अच्छा स्वास्थ्य प्रकृति के नियमों के परिपालन एवं शुद्ध खानपान से बनते हैं। यह क्रय-विक्रय की वस्तुएं नहीं हैं जो बाजार से खरीदी जा सकें भोजन स्वास्थ्य की दृष्टि से लेना चाहिये, स्वाद की दृष्टि से नहीं। जीभ जो मांगती मत दो, पेट जो मांगता वह दो। भोजन करना पुण्य है, जीभ पर लाड़ करना पाप है। जीभ सुधरने से जीवन सुधरता है, धन से हमको अच्छा भोजन मिल सकता है, लेकिन भूख नहीं। धन से दवा खरीद सकते हैं लेकिन स्वास्थ्य नहीं। धन से भोग विलास की वस्तुएँ खरीद सकते हैं, मगर उन्हें भोगने की क्षमता नहीं। धन से अच्छा पलंग खरीद सकते हैं मगर निद्रा नहीं। इन सभी क्षमताओं को प्रकृति के नियमों का पालन करने पर ही प्राप्त कर सकते हैं। खान पान का गहरा प्रभाव रामचरित मानस में कुम्भकरण के चरित्र में स्पष्ट देखने को मिलता है। सीता हरणोपरान्त श्रीराम ने लंकापुरी पर आक्रमण किया तो रावण ने अपनी मदद के लिये लघु भ्राता कुम्भकरण को मदद के लिए जगाया उस समय कुम्भकरण खाली पेट था वह रुदन करते हुए रावण से कहता है,

सुनि दशकंधर वचन तब, कुम्भकरण विलखान।

जगदम्बा हरआन अब सठ चाहत कल्याण॥

भल न कीन्ह ते निरिचर नाहा –



अब मोहि आइ जागएहि काहा।

अजहु तात त्यागहु अभिमाना –
भजहु राम हुइहि कल्याणा॥

राम रूप गुण सुमरत मगन भयेऊ छण एक।

जब रावण ने कुम्भकरण की उपदेशक बातें सुनी एवं श्रीराम का भजन करते देखा तो उसके पवित्र विचार बदलने के लिये उसे काफी मात्रा में मांस एवं मदिरा पान कराया। मांस एवं मदिरापान करते ही कुम्भकरण के तत्काल पवित्र विचार बदल गये और बिना सेना को साथ लिये ही श्री राम से लड़ने के लिए चल पड़ा।

‘महिश खाये कर मदिरा पाना—

गर्जाबज्राघात समाना

कुम्भकरण दुर्मद रन रंगा —

चला दुर्गतजि सेन न संगी’

इससे यह कहावत चरितार्थ होती है — (मादक पदार्थ व शराब, कर देते बुद्धि खराब)

यदि किसी देश की संस्कृति नष्ट करना है तो उस देश के निवासियों का खान-पान दूषित कर दो, संस्कृति अपने आप नष्ट हो जायेगी क्योंकि मदिरा पीने वाले व्यक्ति हमेशा करने वाले कार्यों को न करना और कभी न करने योग्य कार्यों को हमेशा करना पसंद करते हैं। श्री हरिवंशराय बच्चन ने लिखा है।

जहर उगलती मधुशाला ।।

स्मृति को कमजोर बनाती, नाच नचाती मधुशाला ।
क्योंकि सभी अच्छी बातों को पी जाती है मधुशाला ।।

राष्ट्रीय कवि श्री हरिओम पवार ने लिखा है।

जिसके होंठों पर सिगरेट पर सिगरेट और
पेट में दारु बहती है।

यह पीढ़ी अपने आप को बुद्धिजीवी कहती है ।।

प्रकृति का नियम भी है।

आम फरत पत्तन सहित,
महुआ निज पत्त खोये।

जाको रस जो नर पियें तो बुद्धि कहां से होये ।।

महुये से ही शराब बनती है ।।

युद्ध कभी-कभी नाश करता है, किन्तु शराब हर मौसम व हर समय मानव की जान लेती रहती है शराब अपने चंगुल में फंसे व्यक्तियों का स्वास्थ्य, आयु, धन, मान, सम्मान सब कुछ लूट कर ले जाती है। एक यहूदी कहावत है — जहाँ शैतान नहीं जा सकता है, वहाँ शराब को भेज देता है।

मानव को सबसे बड़ा भय अपने शरीर छूटने का रहता है। फिर भी विपरीत खान पान कर अपने शरीर को विनाश की ओर ले जा रहा है। गलत खान-पान मानसिक

विकलांगता पैदा कर देता है जो शारीरिक विकलांगता से ज्यादा घातक है। मद्यपान विचारों को दूषित करता है। दूषित विचारों से कर्कश वाणी निकलकर कलह पैदा करती है। कलह का वातावरण मानव समाज एवं राष्ट्र के शान्तिमय वातावरण के लिये बड़ा घातक होता है।

मद्यपान करने से लोगों की चिन्तन करने की शक्ति भी शक्ति नष्ट हो जाती है, शास्त्रों के अनुसार चिन्तन करने के मुख्य तीन प्राण तत्व हैं।

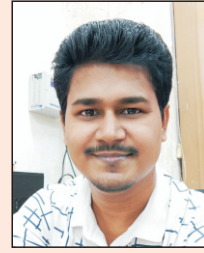
(1) शाकाहारी भोजन

(2) व्यसन मुक्त वातावरण।

(3) क्रूरता विहीन जीवन ।।

मद्यनिषेध हमारी राष्ट्रीय नीति व राष्ट्रीय कर्तव्य है, किन्तु हमारी सरकार इसके प्रति उदासीन है। शराब उत्पादन को सरकार राष्ट्रीय आय का बड़ा श्रोत मानती है। मगर सरकार यह भूल जाती है कि शराब के सेवन से जो रोग, अपराध, दंगे, बलात्कार आदि बढ़ते हैं उन्हें कम करने हेतु औषधालय, पुलिस, जेल आदि पर खर्च होता है वह शराब से होने वाली आय से कहीं अधिक है। जनता द्वारा चुनी हुए सरकार का उद्देश्य जनता की भलाई करना होता है। अतः राष्ट्रीय आय को न देखते हुए सरकार को शराब के उत्पादन एवं विक्रय पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए। इसी में जनता एवं राष्ट्र का हित निहित है। ००





माँ

‘गम के बादल जब भी कभी मुझ पर आ कर मँडराते हैं,
माँ कर तुमको याद, बूंदे खुशियों की ही बरसाते हैं,
मुश्किलें पत्थर बन जा राहें रोक खड़ी हो जाती हैं,
देख दुआएं तेरी खुद फिर मेरी राह सजाती हैं,
देख ली सारी दुनिया पर वो खुशी ढूँढ़ ना पाती हूँ,
बस तेरे आँचल के तले माँ, मैं गाता मुस्काता हूँ,
बस तेरे आशीश से ही माँ, जीवन का सवेरा है,
और नहीं तो हर पल, हर लम्हा, घनघोर अंधेरा है,
क्या धरती, क्या आस्मां, सबके कद छोटे पड़ जाते हैं,
माँ तेरे चरणों में तो ईश्वर भी शीश झुकाता है,
तेरी ममता का गौरव, समा न पायेगा,
कितना भी कह लूँ, कहने को शेष बहुत रह जाएगा।’



अपना हमें बना लेना

‘हमको ख्वाबों में ख्यालों में तुम बसा लेना,
अपने होठों पे हमकों गीतों—सा सजा लेना,
हम क्यामत तलक न साथ तेरा छोड़ेंगे,
हम हैं हाजिर हमें जब चाहे आजमा लेना,
कोई महफिल हो या तन्हाई का आलम कोई,
बड़ी मशरूफ़ रहो या रहो खोयी—खोयी,
हर घड़ी साथ निभाने का तुमसे वादा है,
जी में जब आये हमें बेझिझक बुला लेना,
साथ कोई दे न दे तेरा कहीं कोई बात नहीं,
जलते अंगारे—से दिन हो या सर्द रात सही,
खुद को तन्हा ना समझना ना करना गम कोई,
हम तुम्हारे ही हैं अपना हमें बना लेना....’

मैं कब कहता हूँ

मैं कब कहता हूँ जीवन का संग्राम मिटे, आराम मिले
मैं कब कहता हूँ बिना काम के मुझे महकती शाम मिले।
मैं कब कहता हूँ दुखों के बादल छायेँ जो छंट जायें
मेरी राहों में बिखरे जो कंटक सारे वो हट जायें।
हर कोई मुझको प्यार करे, ऐसी भी चाह नहीं मुझको
कोई मुझसे नाराज रहे उसकी परवाह नहीं मुझको।
मैं रहूँ शिखर पर ऐसी भी, अब मुझको नहीं तमन्ना है
मैं नहीं चाहता पन्ना हो, कोरा जो जीवन पन्ना है।
जाने कितने दुर्दिन झेले, और क्या-क्या नहीं सहा मैंने
पर हाथ हृदय पर रखकर तुम, कुछ बोलो कभी कहा मैंने।
मुझको तो याद नहीं है अब, हमने फरियाद की हो कुछ
इक तुम्हें छोड़कर दुनिया में, कभी और भी याद किया हो कुछ
इसका मतलब यह नहीं सखे, मेरी न कोई अभिलाषा है कुछ
बातें अंतर्मन में जिनका यह बालक प्यासा है।
कुछ काम, क्रोध, कुछ मद भी और कुछ स्वार्थ संरचना मैं भी हूँ
मेरी भी कुछ अभिलाषा है, ईश्वर की रचना मैं भी हूँ।
मेरी सहार्दिक इच्छा है, भारत अपना उत्थान करे।
यशगान मिले चहुँ ओर इसे, जग सारा जय-जय गान करे।
हर एक व्यक्ति मेहनतकश हो, और हर हाथों को काम मिले
कान्हा को राधा मिले यहां और हर सीता को राम मिले।
विज्ञान प्रगति के पथ पर हम नित आसमान छूते जायें
ग्रह, सूर्य, चन्द्रमा तारों तक हम अपने बलबूते जायें।
पर इस उड़ान में ध्यान रहे, संस्कार न भूलें हम अपना,
सद्भाव और सद्ज्ञान युक्त, व्यवहार सभी से हो अपना
करबद्ध निवेदन है तुमसे, सम्बद्ध यही अभिलाषा है।
सोये न कोई खुले व्योम तले, हमको तुमसे यह आशा है।
यदि कुछ देने की इच्छा हो तो हमें रवानी दे डालो
भूखे को रोटी मिले और प्यासे को पानी दे डालो।
हो वसन सभी के तन पर और कोई प्राणी न नंगा हो
सौहार्द्रपूर्ण हों सभी जाति न हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो।



देवेन्द्र कुमार मिश्रा
डी.ई.ओ.



न जाने ऐसी क्या बात हो गई

न जाने ऐसी क्या बात हो गई,
कुछ पल का इंतजार लंबी रात हो गई।

क्यों परछाई भी अकेला,
छोड़ कर आयी है।
अपनी अहमियत बताने के लिए,
आज हमें इंतजार कराई है।

न जाने ऐसी क्या बात हो गई,
कुछ पल का इंतजार लंबी रात हो गई।

दिन भर व्यस्त रह कर,
शाम को अपना गीत गाती थी।
कुछ मेरी तो कुछ अपनी,
अनकही बातें कह जाती थी।

न जाने ऐसी क्या बात हो गई,
कुछ पल का इंतजार लंबी रात हो गई।

लड़कर वो खुश,
हो जाया करती थी।
शांत हो कर फिर वो,
गहरी नींद सो जाया करती थी।

न जाने ऐसी क्या बात हो गई,
कुछ पल का इंतजार लंबी रात हो गई।

हर पल अपने होने का,
वो हमें एहसास कराती थी।
प्यार कर रोज,
हमें वो इठलाती थी।

न जाने ऐसी क्या बात हो गई,
कुछ पल का इंतजार लंबी रात हो गई।

हर बार वो एक ही,
बात कह जाती थी।
मुझको पा कर खुद को,
खुशनसीब कहलाती थी।

न जाने ऐसी क्या बात हो गई,
कुछ पल का इंतजार लंबी रात हो गई।



विनय कुमार पटेल



ग़ज़ल

सरे राह यूं रुसवा न कीजिये



ए.एच. खान
वरिष्ठ लेखापाल

इतना भी गम ए सनम मुझे न दीजिए
सरेराह मुझे यूं रुसवा न कीजिये

खुद से कभी हमको जुदा न कीजिये
अशकों को यूं बहाया न कीजिये

शबे ग़म हमेशा कब रहती हैं
सहर का इन्तजार तो कीजिये

हर वक्त इल्जाम हमें न दीजिये
वेवजह हमसे दूरियां न कीजिये

रूबरू हमसे कभी बात तो कीजिये
नादां की दोस्ती से बचा कीजिये

गैरों की बातों का ख्याल मत कीजिये
'हफीज' माँ की दुआएं हमेशा लीजिये।



अप्रैल 2019 से मार्च 2020 तक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

कल्याण कक्ष



सोहन सिंह

कल्याण सहायक

1. भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय बैडमिन्टन प्रतियोगिता जो कि दिनांक 18.09.2019 से 21.09.2019 तक भोपाल कार्यालय द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।
2. भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता जो कि दिनांक 24.09.2019 से 26.09.2019 तक कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) रायपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने उपविजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर्क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।
3. भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता जो कि दिनांक 30.10.2019 से 02.11.2019 तक कार्यालय महालेखाकार (ले./ह.)-द्वितीय महाराष्ट्र, नागपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।
4. भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता जो कि दिनांक



04.01.2020 से 06.01.2020 तक कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)—अहमदाबाद, गुजरात द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।

5. भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता जो दिनांक 07.01.2020 से 09.01.2020 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित की गई थी में कार्यालय की संयुक्त टीम ने उपविजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर्क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता खेलने की पात्रता हासिल की।
6. भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता जो कि दिनांक 18.02.2020 से 20.02.2020 तक कार्यालय महालेखाकार (ले./ह.)—प्रथम महाराष्ट्र, मुम्बई द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।

अखिल भारतीय सिविल सेवा/मुख्यालय/राष्ट्रीय वर्ष 2019-20 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

1. कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री एस. के. राठौर का चयन गोवा इंटरनेशनल ग्रैण्ड मास्टर शतरंज प्रतियोगिता जो दिनांक 17.06.2019 से 25.06.2019 तक गोवा में आयोजित की गई थी में भाग लेने हेतु मध्य प्रदेश टीम में चयन किया गया।
2. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)— प्रथम, एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री जाहिद अख्तर, श्री सौरभ रावत एवं श्री ज्योनेक्स मैथ्यु, श्री सुशांत ठाकुर (भोपाल शाखा) का चयन अखिल All India Independence Cup Football Tournament- 2019 at Now Gong (Assam) प्रतियोगिता जो दिनांक 22.09.2019 से आयोजित की गई थी में मुख्यालय फुटबॉल टीम में चयन किया गया।
3. अखिल भारतीय सिविल सेवा बैडमिन्टन स्पर्धा जो दिनांक 27.12.2019 से 02.01.2020 तक गुजरात में आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री गौरव प्रताप एवं श्री रोहन पाराशर ने म.प्र. टीम की ओर से भाग लिया।
4. अखिल भारतीय सिविल सेवा शतरंज स्पर्धा जो दिनांक 20.02.2020 से 28.02.2020 तक रांची, झारखण्ड में आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम, एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री अशरफ कुरैशी एवं श्री सुनील कुमार राठौड़ ने म.प्र. टीम की ओर से भाग लिया।
5. अखिल भारतीय सिविल सेवा कैरम स्पर्धा जो दिनांक 14.03.2020 से 20.03.2020 तक चण्डीगढ़ में आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम मध्य प्रदेश (भोपाल) शाखा में कार्यरत श्री के. रामचन्द्रण ने म.प्र. टीम की ओर से भाग लिया।

भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय एवं अंतर्क्षेत्रीय वर्ष 2019-20 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन हेतु मुख्यालय द्वारा अम्पायर नियुक्त

1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री काशीराम को मुख्यालय द्वारा पूर्वी क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता जो दिनांक 16.09.2019 से 19.09.2019 तक कोलकाता में आयोजित की गई थी में विभागीय अम्पायर नामित किया गया।
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—प्रथम एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय म.प्र. ग्वालियर की ओर से सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन।
1. 01 जनवरी 2020 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले/ह)—प्रथम एवं कार्यालय महालेखाकार (ले/ह)—द्वितीय के संयुक्त रूप से कार्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें समस्त अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।
2. अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर दिनांक 14.06.2019 से 21.06.2019 तक कार्यालय परिसर में कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय, म.प्र. ग्वालियर की ओर से आयोजन किया गया जिसमें महालेखाकार महोदय द्वारा प्रशिक्षण दिया गया जिसमें कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।
3. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)— प्रथम एवं कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)—द्वितीय म.प्र. ग्वालियर में प्रथम एकाउण्ट्स क्रिकेट प्रीमियर लीग (A.P.L.) टेनिस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 01.02.2020 से 07.02.2020 तक किया गया जिसमें P.A.G.-XI विजेता रही एवं कार्यालय के समस्त कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। ○○

कैप्टन रूपसिंह स्टेडियम, ग्वालियर





विदाई

माह अप्रैल 2019 से मार्च 2021 तक



1. श्री पी. के. कम्ठान
सहायक लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 15.4.1959
से.नि.दिनांक : 30.04.2019

5. श्री राजदेव खलको
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 15.5.1959
से.नि.दिनांक : 31.5.2019



2. श्री के.एन.गोपालकृष्णन्
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 24.04.1959
से.नि.दिनांक : 30.04.2019



6. श्री रविन्द्र सिंह
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक 15.5.1959
से.नि.दिनांक 31.5.2019



3. श्री अशोक कुमार
लेखापाल
जन्म दिनांक : 2.4.1959
से.नि.दिनांक : 30.4.2019



7. प्रकाश सिंह सिकरवार
लेखापाल
जन्म दिनांक : 8.5.1959
से.नि.दिनांक : 31.5.2019



4. बालकृष्ण आर्य
वरिष्ठ लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 15.5.1959
से.नि.दिनांक : 31.5.2019



8. श्री राम प्रकाश गुप्ता
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
जन्म दिनांक : 1.6.1959
से.नि.दिनांक : 31.5.2019



9. श्रीमती किरण दुबे
लेखा अधिकारी
जन्म दिनांक : 22.6.1959
से.नि.दिनांक : 30.6.2019



13. श्री उपेन्द्र कुमार बरुआ
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 1.7.1959
से.नि.दिनांक : 30.6.2019



10. श्री ओम प्रकाश बाजपेयी
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 6.6.1959
से.नि.दिनांक : 30.6.2019



14. श्री लक्ष्मण राव अकोलकर
पर्यवेक्षक
जन्म दिनांक : 30.7.1959
से.नि.दिनांक : 31.7.2019



11. श्री वकील बाबू तिवारी
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 11.6.1959
से.नि.दिनांक : 30.6.2019



15. श्री बाल कृष्ण आर्य
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 03.07.1959
से.नि.दिनांक : 31.7.2019



12. श्री हरविलास सिंह बघेल
लेखापाल
जन्म दिनांक : 16.6.1959
से.नि.दिनांक : 30.6.2019



16. श्री प्रदीप कुमार पाठक
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 31.7.1959
से.नि.दिनांक : 31.7.2019



17. श्री किशोर कुमार संत
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
जन्म दिनांक : 08.08.1959
से.नि.दिनांक : 31.08.2019



21. श्री प्रेम कुमार कोटिया
एम.टी.एस.
जन्म दिनांक : 7.10.1959
से.नि.दिनांक : 31.10.2019



18. श्री राज कुमार बरैया
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 03.08.1959
से.नि.दिनांक : 31.08.2019



22. श्री मिलिन्द धाणेकर
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 10.12.1959
से.नि.दिनांक : 31.12.2019



19. श्री रामवीर शर्मा
पर्यवेक्षक
जन्म दिनांक : 1.9.1959
से.नि.दिनांक : 31.8.2019



23. श्री सुशील सहाय
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 2.12.1959
से.नि.दिनांक : 31.12.2019



20. श्री भागीरथ माहौर
लेखापाल
जन्म दिनांक : 29.8.1959
से.नि.दिनांक : 31.8.2019



24. श्री सैयद फैजल रहमान
लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 20.1.1960
से.नि.दिनांक : 31.1.2020



25. श्री बालादीन चौरिया
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 2.1.1960
से.नि.दिनांक : 31.1.2020



29. श्री दीपक सावले
पर्यवेक्षक
जन्म दिनांक : 22.4.1960
से.नि.दिनांक : 30.4.2020



26. श्री कमलेश कुमार
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
जन्म दिनांक : 23.3.1960
से.नि.दिनांक : 31.03.2020



30. श्रीमती रमादेवी जोशी
एम.टी.एस.
जन्म दिनांक : 20.4.1960
से.नि.दिनांक : 30.4.2020



27. श्री एच.जी. चौरासिया
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 27.3.1960
से.नि.दिनांक : 31.3.2020



31. श्री अशोक कुमार
एम.टी.एस.
जन्म दिनांक : 5.4.1960
से.नि.दिनांक : 30.4.2020



28. श्री वर्गीस मणी
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 10.3.1960
से.नि.दिनांक : 31.3.2020



32. श्री बी.एल. शाह
पर्यवेक्षक
जन्म दिनांक : 25.5.1960
से.नि.दिनांक : 31.5.2020





33. श्री भगवान दास ठाकुर
सहायक लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 5.6.1960
से.नि.दिनांक : 30.6.2020



37. श्री कल्याण सिंह शाक्य
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 27.7.1960
से.नि.दिनांक : 31.7.2020



34. श्री जे.पी. मगरैया
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 07.06.1960
से.नि.दिनांक : 30.6.2020



38. श्री सतीश कुमार राजौरे
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 25.7.1960
से.नि.दिनांक : 31.7.2020



35. श्री संसार सिंह सिसौदिया
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 01.07.1960
से.नि.दिनांक : 30.6.2020



39. श्री राम नारायण प्रजापति
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 05.07.1960
से.नि.दिनांक : 31.7.2020



36. श्री सुनील कुमार शर्मा
पर्यवेक्षक
जन्म दिनांक : 3.7.1960
से.नि.दिनांक : 31.7.2020



40. श्री चुन्नी लाल सरल
वरिष्ठ लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 1.9.1960
से.नि.दिनांक : 31.8.2020





41. श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता
वरिष्ठ लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 2.9.1960
स्वै. से.नि.दिनांक : 30.9.2020



45. श्री लक्ष्मण प्रसाद आर्य
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 12.12.1960
से.नि.दिनांक : 31.12.2020



42. श्री श्रीपद रत्नपारखे
सहायक लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 14.9.1960
से.नि.दिनांक : 30.9.2020



46. श्री राम प्रकाश पाल
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 19.12.1960
से.नि.दिनांक : 31.12.2020



43. श्री जय सिंह भदौरिया
लेखापाल
जन्म दिनांक : 1.7.1960
मृत्यु दिनांक : 21.8.2020



47. श्री वनवारी लाल व्यास
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 15.12.1960
से.नि.दिनांक : 31.12.2020



44. श्री विजय सिंह
एम.टी.एस.
जन्म दिनांक : 01.10.1960
मृत्यु दिनांक : 29.2.2020



48. जे.के. जैन
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
जन्म दिनांक : 22.6.1960
से.नि.दिनांक : 30.6.2020





49. श्रीमती बेबी कुम्भारे
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 17.1.1961
से.नि.दिनांक : 31.1.2021



52. श्री के. आर. जंगारिया
पर्यवेक्षक
जन्म दिनांक : 31.3.1961
से.नि.दिनांक : 31.3.2021



50. श्री मनोहर लाल बामौरिया
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 25.2.1961
से.नि.दिनांक : 28.2.2021



53. अनीता पवित्रन
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 17.1.1966
स्वै. से.नि.दिनांक : 10.12.2000



51. श्री पाती राम खोड्या
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 5.1.1961
से.नि.दिनांक : 31.1.2021



54. श्री हरीश कुमार बान
पर्यवेक्षक
जन्म दिनांक : 25.2.1961
से.नि.दिनांक : 28.2.2021



55. श्रीमती एनी.जार्ज
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 28.2.1961
से.नि.दिनांक : 28.2.2021



57. श्री विनय कुमार जैन
सहायक लेखाधिकारी
जन्म दिनांक : 3.4.1961
स्वै. से.नि. दिनांक : 31.8.2020



56. श्री आर.के सक्सेना
वरिष्ठ लेखापाल
जन्म दिनांक : 10.7.1961
स्वै. से.नि.दिनांक : 1.9.2020



58. श्री आर.एस. तोमर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
जन्म दिनांक : 5.1.1961
से.नि.दिनांक : 31.1.2021



59. श्री संजीव कुमार गुप्ता
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
जन्म दिनांक : 15.8.1959
से.नि.दिनांक : 31.8.2019

“महिला सशक्तिकरण दिवस कार्यक्रम”- 2021 की झलकियाँ





कार्यालयीन गृहपत्रिका 'वीरांगना' को "नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति" द्वारा वर्ष 2019 का "सर्वश्रेष्ठ पत्रिका" का प्रथम पुरस्कार स्वरूप "पत्रिका शील्ड" प्राप्त करते हुए संपादक जे. जे. श्रीवास्तव, पर्यवेक्षक



कार्यालय द्वारा वर्ष 2019 में "हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन" के लिये श्री जे एन पेरुमल, उप महालेखाकार "नराकास शील्ड" प्राप्त करते हुए